।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९६
मानव सृष्टि सं.- १९६०८५३१२०
सृष्टि सं.- १९७२९४९१२०

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वर्ष-18 | अंक-3 | बैशाख शु. 12 से ज्येष्ठ कृ. 12 सं. 2076 वि. | 16-31 मई 2019 | अमरोहा, उ.प्र. | पृष्ठ-16 | प्रति-5/-

'जीवेम् शरदः शतम्- भूयश्च शरदः शतात्' महाशय जी!

ताल कटोरा स्टेडियम में हुआ पद्माभिषेक महोत्सव

धूमधाम से मना पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी का ९६वां जन्मोत्सव

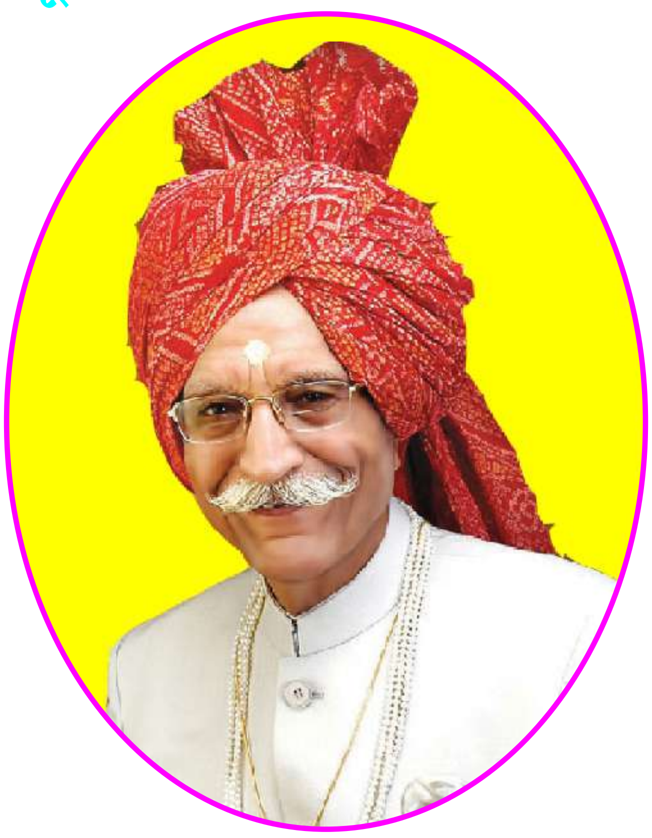

नई दिल्ली। आर्य जगत के प्रख्यात व्यक्तित्व विश्व प्रसिद्ध मसाला कम्पनी एमडीएच के स्वामी आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी का 96वां जन्मोत्सव दिल्ली के ताल कटोरा स्टेडियम में 26 मार्च को पद्माभिषेक महोत्सव के रूप में भव्यता से मनाया गया। इस अवसर पर देशभर के आर्य नेताओं, मूर्धन्य सन्यासियों तथा राजनेताओं के साथ ही शुभकामनाओं देते हेतु जनसैलाब उमड़ पड़ा।

सामगान से हुआ शुभारम्भ

महाशय जी का पद्माभिषेक कन्या गुरुकुल की छात्राओं द्वारा किये गये सस्वर वेदपाठ (सामगान) के साथ शुरू हुआ। मंगलाचरण करते हुए महाशय जी के सुखद, सुदीर्घ, सुस्वस्थ व सुयशमय जीवन की मंगलकामना की गयी। गुरुकुल की बालिकाओं ने कोकिला कंठ से सामूहिक गान करते हुए अद्भुत तरंगे उत्पन्न कीं जिसने सभी को झूमने के लिए विवश कर दिया।

एक यज्ञीय पुरुष महाशय जी

महाशय जी का जीवन मानव सेवा धर्म एवं परोपकार के लिए समर्पित होने के कारण यज्ञमय है। समाज के दीन दुखियों के आँसू पोछने वाले, रोजगार देकर जीवन कला सिखाने वाले, सेवा साधना के क्षेत्र में अनेकानेक नवकीर्तिमान स्थापित करने वाले महाशय जी वास्तव में एक याज्ञिक व्यक्तित्व हैं। ये स्वर वक्ताओं के वक्तव्यों व बधाई संदेशों में बराबर गूंजते रहे, पूरा वातावरण ही जैसे मधुरिम हो उठा।

महाशय जी के उद्गार

आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद करते हुए पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आप लोग जिस प्रकार से मुझे शुभकामनाएं दे रहे हो उससे मेरी आयु लगातार बढ़ती ही जायेगी। मेरे जीवन का लक्ष्य मानव सेवा है जो मैं निरन्तर करता ही जाऊंगा। उन्होंने कहा कि सभी इंसान नेक बनें, आप सभी सुखी रहें, सारे विश्व में शान्ति हो, प्रेम हो और सबका कल्याण हो।

सभी ने दीं हार्दिक शुभकामनाएं

कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के प्रधान सुरेश चन्द आर्य, महामंत्री प्रकाश आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य, महामंत्री विनय आर्य, सिक्किम के राज्यपाल महामहिम गंगा प्रसाद जी, सीकर के सांसद स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी सम्पूर्णानन्द, स्वामी धर्मानन्द, दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया तथा आर्य कन्द्रीय सभा के महामंत्री सतीश चड्ढा, आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुन देव चड्ढा आदि ने महाशय जी को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी। जन्मोत्सव में आचार्य सूर्या देवी, आचार्या सुमेधा, आचार्या अन्नपूर्णा, आचार्या पवित्रा, आचार्या सुकामा, आचार्या दर्शना, आचार्या कल्पना, आचार्या धारणा व आचार्या सविता आदि ने गुरुकुल की ओर से महाशय जी को उनके जन्म

शेष पृष्ठ- २ पर...

प्रोफिसर महावीर जी को पुरस्कार देते महामहिम उपराष्ट्रपति-केसरी

प्रो. महावीर राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित

दिल्ली। भारत की राजधानी देहली में उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार के पूर्व कुलपति एवं वर्तमान में योगर्षि स्वामी रामदेवजी के विश्व प्रसिद्ध पतंजलि विश्वविद्यालय के प्रति- कुलपति, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान प्रो. महावीर अग्रवाल, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किये गये। महामहिम राष्ट्रपति की ओर से उन्हें भारतीय गणराज्य के महामहिम उपराष्ट्रपति श्रीमान वैंकया नायडू ने यह पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किया।

संस्कृत जगत में अत्यन्त लोकप्रिय एवं सम्मानित प्रो. महावीर अनेक गरिमापूर्ण पदों को विभूषित कर चुके हैं। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष, प्राच्यविद्या संकायाध्यक्ष, कुलसचिव, आचार्य एवं उपकुलपति आदि दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहण करने वाले डॉ. महावीर, उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष के रूप में संस्कृत सेवा कर चुके हैं।

आपके सैकड़ों शोध पत्र राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। अनेक राष्ट्रीय एवं विश्वस्तरीय शोध सम्मेलनों का सफल

शेष पृष्ठ- २ पर...

५१ कुण्डीय महायज्ञ के साथ मनाया स्वामी दयानन्द जी का जन्मदिन

यज्ञ से समस्त वायुमण्डल शुद्ध होता है- आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

नई दिल्ली। आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर के तत्वावधान में वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान एवं अध्यात्म पथ के संपादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों और वेदप्रचार, पर्यावरण शुद्धि, विश्वशान्ति एवं सुख समृद्धि हेतु 51 कुण्डीय महायज्ञ धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इस शुभावसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि अग्नि में डाले गये पदार्थ, पदार्थ विज्ञान के अनुसार नष्ट नहीं होते अपितु रूपान्तरित होकर सूक्ष्म रूप में कई गुना शक्तिशाली बनकर अन्तरिक्ष में वायु एवं सूर्य रश्मियों के माध्यम से फैलकर व्यापक हो जाते हैं। यज्ञ से समस्त वायुमण्डल शुद्ध होता है। यज्ञ औषधि रूप है, अतः यज्ञ करने से ऋतु संधियों में उत्पन्न रोगों का नाश होता है।

यज्ञ के मुख्य यजमान आर्यकन्या विद्यालय समिति के प्रधान जगदीश गुप्ता जी थे। समारोह के मुख्य अतिथि श्रम एवं राज्यमंत्री टीकाराम जूली जी थे। विद्यालय समिति के मंत्री प्रदीप कुमार आर्य ने सभी विद्वानों, नेताओं एवं समाजसेवी लोगों को पीतवस्त्र पहनाकर स्वागत किया।

इस अवसर पर कै. रघुनाथ सिंह, अशोक कुमार आर्य, प्रदीप कुमार आर्य, सुरेश कुमार दरगन, प्रद्युम्न कुमार गर्ग एवं जिले भर से आए संस्थाओं के पदाधिकारी, आर्य समाजों के सदस्य, विद्यालय के विद्यार्थी व स्टाफ के सदस्य बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थे। अंत में विद्यालय समिति के निदेशक श्रीमती कमला शर्मा ने सभी का आभार प्रकट किया। शांतिपाठ के पश्चात् 5 हजार लोगों ने ऋषिलंगर ग्रहण किया।

प्रथम पृष्ठ का शेष... ताल कटोरा स्टेडियम...

पर हार्दिक शुभकामनाएं दी। महाशय जी की पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी ने सभी आचार्याओं व कन्याओं का महाशय जी की ओर से अभिनन्दन किया।

आर्य मीडिया सेन्टर ने की महोत्सव की कवरेज

इस जन्मोत्सव पद्माभिषेक महोत्सव की कवरेज के लिए 'महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सेन्टर' ने सक्रिय भूमिका निभायी। मीडिया सेन्टर द्वारा महाशय जी के सेवा कार्यों की डॉक्यूमेन्ट्री फिल्में बनायी गईं, जिसे 26 मार्च को देख हजारों उपस्थित लोग तथा यूट्यूब, फेसबुक व इंटरनेट के माध्यम से देखने वाले लोग अभिभूत हो गये। आयोजन का पारस चैनल तथा सारथी चैनल पर लाइव टेलीकास्ट भी किया गया।

झलकियाँ

- इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, ई-मेल, व्हाट्सअप, मैसेज, टेलीग्राम, इंस्टाग्राम, फेसबुक, ट्यूटर, टैक्स मैसेज तथा दूरभाष द्वारा हजारों लोगों ने दी शुभकामनाएं
- भारत की आर्य प्रतिनिधि सभाओं ने दी महाशय जी को जन्मदिन की शुभकामनाएं।
- आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, हॉलैण्ड, मॉरीशस सहित कई देशा से आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों ने दी महाशय जी को जन्मदिन की बधाई।
- ढोल ताशों एवं आतिशबाजी से हुआ महाशय जी का जोरदार स्वागत।
- महाशय जी कैसे बने महाशय नाटिका ने सभी का मन मोहा।
- महाशय जी 'जियो हजारों साल' तथा पंजाबी गीतों पर नृत्य के कार्यक्रम रहे प्रशंसनीय।
- महाशय जी के जीवन पर आधारित नाटिका 'कैसे स्यालकोट में जन्म लेकर भारत में तांगा चलाकर महाशय जी दुनिया में मसालों के शहंशाह' बहुत ही प्रेरक रही यह नाट्य प्रस्तुति। संगीत मनभावन सुनकर स्वयं भी थिरकने लगे महाशय जी।

प्रथम पृष्ठ का शेष... प्रो. महावीर राष्ट्रपति.....

आयोजन करते हुए आपने देश, विदेश की अनेक शोध संगोष्ठियों में मुख्य अतिथि, अध्यक्ष अथवा मुख्य वक्ता के रूप में सहभागिता की है। आपने संस्कृत के विकास, विस्तार एवं उत्थान के लिए अमेरिका, इंग्लैण्ड, बैंकाक, नेपाल आदि देशों की यात्राएं की हैं।

प्रो. अग्रवाल के निर्देशन में 70 शोधार्थी शोधोपाधि प्राप्त कर चुके हैं। शोध की सर्वोच्च डी-लिट् उपाधि से अलंकृत डॉ. महावीर की दूरदर्शन के आस्था, संस्कार, वैदिक गुरुकुलम् आदि चैनलों पर सैकड़ों वार्ताएं प्रसारित हुई हैं। आकाशवाणी से प्रसारित आपकी वार्ताओं को अत्यन्त आदर पूर्वक सुना जाता है। आपकी सौ से अधिक संस्कृत वार्ताएं आकाशवाणी से प्रसारित हुई हैं।

प्रो. महावीर को राष्ट्रपति सम्मान के अतिरिक्त, दिल्ली संस्कृत अकादमी से महर्षि वाल्मीकि पुरस्कार, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान से विशिष्ट संस्कृत सेवा सम्मान, वेद वेदांग पुरस्कार, आर्य विभूषण पुरस्कार, समन्वय पुरस्कार, पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार आदि के अतिरिक्त अनेक राष्ट्रीय सांस्कृतिक, साहित्यिक संस्थाओं ने विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया है। सितम्बर 1972 से वर्तमान समय तक आपकी अध्यापन, लेखन, प्रकाशन एवं शोध यात्रा निरन्तर गतिमान है।

ऐसे मनीषी विद्वान को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किये जाने पर संस्कृत जगत् में हर्ष की लहर व्याप्त है। योग ऋषि स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकृष्ण जी, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी, कुलसचिव श्री गिरीश कुमार अवस्थी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद कुमार, कुलसचिव प्रो. दिनेश भट्ट, प्रो. भोला झा आदि महानुभावों ने हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रदान की हैं।

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले

आर्यावर्त केसरी

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापरिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है-

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-
स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है।

-प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : 8630822099

नोएडा द्वारा नवरात्रों पर हुआ वैदिक यज्ञ

सुरेश चन्द्र अग्रवाल
नोएडा।

ईश्वर जब कोई कार्य कराना चाहता है तो किसी को प्रेरणा देकर करा लेता है। ऐसा ही हुआ। प्रातः भ्रमण के समय मन में विचार आया कि इस बार नवरात्रों पर घरों में 9 हवन कराये जाएं। परिवारों में जाकर वार्तालाप किया, तो 14 हवन होना निश्चित हो गये। किसी दिन किसी परिवार में एक हवन तथा किसी दिन दो परिवारों में वैदिक यज्ञ का आयोजन हुआ। ये यज्ञ राजन अरोरा, सुषमा आर्या, बालकृष्ण वर्मा, पिंकी शर्मा, कान्ता मोदी, संजय सक्सेना, धमूलाल ठाकुर, इन्द्रदेव गुप्ता, विश्वनाथ पारीक, सुरेश अग्रवाल, कैलाश चन्द्र गुप्ता के परिवारों में भली प्रकार संपन्न हुए। पास में ही जे0जे0 कालोनी (सेवा वस्ती) सैक्टर 16 में सेवाभारती द्वारा संचालित संस्कार केन्द्र में भी आयोजन किया गया। वैदिक यज्ञ आयोजन में भजन, प्रवचन, ज्ञानचर्चा आदि को भी सम्मिलित किया गया। अन्तिम दो दिनों में मेरठ निवासी विद्वान सुरेश सैनी द्वारा भजन व ज्ञानचर्चा की गयी। इन्द्र देव गुप्ता द्वारा वैदिक साहित्य में उपलब्ध '3 पत्र-पिता के पुत्री के नाम' को भी इस कार्यक्रम का हिस्सा बनाया गया, जो उपस्थित सज्जनों द्वारा सराहा गया। सैक्टर 15 के प्रत्येक ब्लॉक में यज्ञ का आयोजन हुआ। वातावरण की शुद्धि हुई। परिवारों में सभी सज्जनों, यज्ञप्रेमियों का आना-जाना हुआ, जिससे उनमें आपसी मेल-मिलाप, भाईचारा में वृद्धि हुई। आयोजन में सुरेश अग्रवाल, इन्द्रदेव गुप्ता, विजेन्द्र चौधरी, कान्ता मोदी, आदि का विशेष योगदान रहा।

खलासी लाइन, सहारनपुर में मनाया ६५वां वार्षिकोत्सव

रविकान्त राणा
सहारनपुर।

आर्य समाज, सरदार पटेल मार्ग, खलासी लाइन, सहारनपुर के 65वें वार्षिकोत्सव के तीसरे दिन की अन्तिम सभाओं में पं0 उदयवीर ने महिला सम्मेलन व राष्ट्रधर्म के विषयों पर अपने विचार भजनों के माध्यम से रखे- ''आर्यो ने देश जगाया कोई माने या न माने''।

आचार्य संजय याज्ञिक ने सुखी गृहस्थ विषय पर कहा कि यह आपसी परस्पर प्रेम तथा विश्वास पर टिका है। राष्ट्रधर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि व्यक्ति अधिकार तो चाहता है, किंतु कर्तव्य नहीं करना चाहता। देश के पराधीन हो जाने पर वहां के नागरिक अपने को तुच्छ तथा शासकों को उच्च समझने लगते हैं। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय भावना समाप्त हो जाती है। अतः हम जिस संस्कृति में पले व बढ़े हैं, उसी का अनुसरण करना चाहिए। इससे राष्ट्रीयता बढ़ेगी।

नरेन्द्र गर्ग ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा रविकान्त राणा ने कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी सदस्यों व कार्यकारिणी का धन्यवाद दिया। विजय गुप्ता, डॉ0 राजवीर, कृष्णलाल, योगराज, दिनेश कुमार, राजकुमार, ब्रह्मदेव, रामकिशोरी, मणिराम, प्रदीप, मूलचन्द, प्रेमसागर, रोशनलाल, धर्मसिंह, नीलम, आकाश, शिवानी, पुनीत, रवीन्द्र, सुरेश राणा, शोभा, मिथलेश, रश्मि, अनिता, शान्ति, मीना वर्मा, सविता आदि उपस्थित रहे। डॉ0 पूर्णचंद ने मंच संचालन किया।

आर्यसभा ने मनाया अमृत महोत्सव

पीलीभीत। स्वतन्त्रा सेनानी एवं कर्मयोगी स्वामी इन्द्रदेव यति की पुण्य स्मृति के अवसर पर गुरुकुल शाही में 19 व 20 फरवरी को अमृत महोत्सव के रूप में राष्ट्रीय चिन्तन सम्मेलन का आयोजन अखिल भारतीय आर्यसभा के सौजन्य से किया गया। इस अवसर पर वर्तमान राजनीतिक परिपेक्ष्य में गहन चिन्तन व मंथन किया गया। इस अवसर पर अ0भा0 राचार्य सभा, आर्यसभा, धर्मार्थसभा, विधांर्चसभा के पदाधिकारी तथा सदस्यगण उपस्थित रहे।।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

- 12 से 19 मई- आर्यवीर दल शिविर।
- 02 से 09 जून- आर्य वीरांगना शिविर।
- 16 से 23 जून- योग-साधना शिविर।
- 13 से 20 अक्टूबर- योग साधना शिविर।
- 01 से 03 नवम्बर- ऋषि मेला।

ऋषि उद्यान में होने वाले कार्यक्रमों के लिए सम्पर्क सूत्र- 09460421183, 0145-2460164, 0145-2621270

आर्यावर्त केसरी प्रकाशन समूह

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

विश्व भर में वेद के प्रचार-प्रसार व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर-घर पहुंचाने को संकल्पित आर्यावर्त केसरी विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए देश-विदेश से प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित करता है। आवेदन संक्षिप्त जीवनवृत्त के साथ दिनांक 30 जून 2019 तक पहुंच जाने चाहिए। (आवेदन हिन्दी भाषा में ही स्वीकार किये जाएंगे)। पुरस्कार इस प्रकार हैं-

- **अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान प्रदान करने पर- अन्तर्राष्ट्रीय आर्यरत्न पुरस्कार।**
- **राष्ट्रीय स्तर पर वेद के प्रचार-प्रसार, समाज-सेवा के लिए- राष्ट्रीय आर्यावर्त भूषण पुरस्कार।**
- **निःशक्त, गरीब, अनाथ, व गुरुकुलों की उत्कृष्ट सेवा व दानशीलता के लिए- आर्यावर्त सौम्या दानवीरश्री पुरस्कार।**
- **वैदिक साहित्य के विद्वान लेखक, कवि व पत्रकार के लिए- आर्यावर्त कलमश्री पुरस्कार।**
- **युवा लेखक, कवि, गायक, पत्रकार, समाजसेवी के लिए- आर्यावर्त युवा गौरव पुरस्कार।**

आवेदन भेजने का पता : सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
☎ फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

भव्यता से मनी डॉ० अभयदेव की वैवाहिक स्वर्ण जयन्ती

डॉ० सुशील कुमार त्यागी 'अमित'
ज्वालापुर (हरिद्वार)।

डॉ० अभयदेव शास्त्री की पुस्तक 'किशोर काव्य काकली' का विमोचर करते आर्य विद्वान- केसरी

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के यशस्वी स्नातक एवं ग्राम बहादरपुर जट निवासी तथा वरिष्ठ चिकित्सक कविराज डॉ0 अभयदेव शास्त्री की 50वीं वैवाहिक वर्षगांठ के पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनके निवास स्थान 'देवकुटीर' में मांगलिक यज्ञ का आयोजन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वेद विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ0 भरतभूषण विद्यालंकार के ब्रह्मत्व में हुआ। डॉ0 विद्यालंकार ने कहा कि यह श्रीमती विमलादेवी एवं डॉ0 अभयदेव शास्त्री के दाम्पत्य जीवन की मंगलकामना हेतु किया गया है। यज्ञ से मनुष्य की सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं, अत: यज्ञकर्म प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए। या सभी कर्मों में श्रेष्ठ कर्म है।

अतिथियों ने किया काव्यसंग्रह 'किशोर काव्य काकली' का विमोचन

इस अवसर पर डॉ0 अभयदेव शास्त्री द्वारा रचित 'किशोर काव्य काकली' (कविता संग्रह) का विमोचन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य एवं कुलपति प्रो0 वेदप्रकाश शास्त्री, प्रो0 विजयपाल शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री, डॉ0 सुरेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ0 रामरूप शास्त्री, सत्यदेव गुप्ता, डॉ0 चन्द्रभानु आर्य, डॉ0 सुशील कुमार त्यागी 'अमित' आदि मनीषियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रोफेसर वेदप्रकाश शास्त्री ने डॉ0 अभयदेव शास्त्री के दाम्पत्य जीवन की मंगलकामना करते हुए कहा कि मैं डॉ0 अभयदेव शास्त्री की सारस्वत साधना के प्रति सम्मान भाव को व्यक्त करते हुए उनके दीर्घायु, यशस्वी तथा प्रभविष्णु होने की सपत्नीक मंगल कामना करता हूं। 'स्वस्तिपंथा' के मुख्य संपादक तथा वैदिक विद्वान डॉ0 सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने कार्यक्रम का संयोजन करते हुए कहा कि डॉ0 शास्त्री के किशोर कवि ने ईशभक्ति, देशभक्ति, प्रणयगीत, हास्यगीत आदि विषयों पर कलम चलाई। उनके यही गीत अब साहित्य की धरोहर बन गये हैं। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ0 विजयपाल शास्त्री ने कहा कि डॉ0 अभयदेव शास्त्री का दाम्पत्य जीवन उल्लास से भरा होवे तथा उनकी रचनाएं भी आनंददायक होवें। इसी प्रकार जीवन में साहित्य सृजन कर ख्याति प्राप्त करते रहें। गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के उपाचार्य एवं कवि डॉ0 सुशील कुमार त्यागी 'अमित' ने कहा कि 'किशोर काव्य काकली' में सभी कविताएं पठनीय एवं सराहनीय हैं। कवित के हृदय से उपजी उद्भावनाएं हैं। इस अवसर पर हरिद्वार ग्रामीण क्षेत्र के यशस्वी विधायक स्वामी यतीश्वरानंद जी ने भी श्रीमती निर्मला देवी एवं डॉ0 अभयदेव शास्त्री के दाम्पत्य जीवन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। वैदिक विद्वान शिवकुमार शास्त्री (आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर), श्याम सिंह आर्य, सत्यदेव गुप्ता (आगरा), डॉ0 चन्द्रभानु आर्य (साहनपुर, बिजनौर) डॉ0 रामरूप शास्त्री (स्वार, रामपुर) आदि ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर डॉ0 अभयदेव शास्त्री की बेटियां विनीता, कामिनी, रेनु, डॉ0 शालिनी, डॉ0 मीनाक्षी ने सभी आगंतुक महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संयोजन आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर से प्रकाशित 'स्वस्तिपंथा' के मुख्य संपादक एवं वैदिक विद्वान डॉ0 सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने किया। इस अवसर पर डॉ0 अभयदेव शास्त्री के वैवाहिक जीवन की मंगलकामना करते हुए उनके साहित्यिक एवं सामाजिक जीवन पर भी विद्वानों ने प्रकाश डाला।

आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य- वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओ३म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

व्यवस्थापक- आर्यावर्त प्रकाशन
गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०)-२४४२२१
फोन : 05922–262033 / 09412139333

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

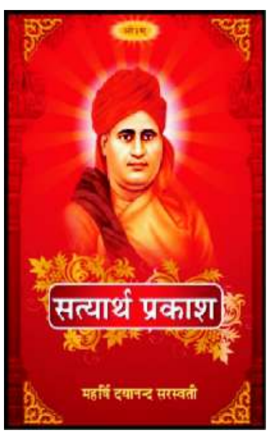

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ नि:शुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश' के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

सत्यार्थ प्रकाश
का एक और नवीन संस्करण प्रकाशित
साइज़ - 18 x 23 x 8
मूल्य- अजिल्द- 60
सजिल्द- 70

दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर **दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ**

नेपाल में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

रामेश्वर सिंह 'रमाकर'
धनगढ़ी (सिरहा) नेपाल।

नेपाल के सिरहा जिले के धनगढ़ी माई नगरपालिका वा0न07 के वासी श्री प्रवेश महतो और बौएलाल शास्त्री जी हमसे मिलने आए और प्रश्न रखे कि हम भागवत कथा करवाने का विचार किए हैं। मैनें सुझाव दिया कि भागवत कथा यदा कदा बहुत लोग करवा चुके हैं और करवाते हैं परन्तु यजुर्वेद पारायण करवाने के लिए हिम्मत करें। तो प्रवेश महतो जी तैयार हुए और योजना बनी। जो पहले बौएलाल जी बिहार के मधुवनी जिला स्थित जड़ैल आर्य गुरूकुल में सलाह लेने गए। वहां विशेषज्ञ श्री आचार्य रामदयाल जी व्याकरणचार्य, दर्शनाचार्य और निरूक्ता चार्य जी ने 15 से 19 मार्च 5 दिन का समय निर्धारित किए। वि0स0 2076 साल चैत्र 1 से 5 गते शुक्रवार से मंगलवार का समय निर्धारित हुआ। बौएलाल जी के साथ हम उनके घर पर जाकर स्थल निरीक्षण किया कि अतिथियों के लिए रहने की जगह कैसी है, शौचालय कैसा है, भोजन कहां बनेगा? यज्ञ स्थल कहां रहेगा, श्रोता लोग कहां बैठेंगे? इत्यादि निरीक्षण के सन्दर्भ में स्थानीय लोगों से भी बातचीत हुई। सभी ने कहा कि यह नया विषय हमारे सामने है। कैसा कार्यक्रम होगा? खैर स्वीकृति मिली। नजदीक समय आने पर पुनः बौएलाल गुरूकुल गए– कितने विद्वान आयेगें? निर्धारित तिथि से एक दिन पूर्व ही आ जाए फिर सारी बातें तय हुई तो गुरूकुल से 14 मार्च को ही आचार्य रामदयाल जी, योगमुनी जी, सूर्य नारायण कवि जी, राजीव आर्य जी के साथ ब्र0 रणजीत जी, ब्र0 ओम आर्य जी, ब्र0 सूर्य प्रताप आर्य जी और ब्र0 कृष्णानन्द आर्य जी आठ आर्य विद्वान अपरान्हकाल निर्धारित स्थान पर पहुंच गए। स्थानीय वासी उत्साहित हुए और बड़ी कौतुहलता से आने वाले समय की प्रतीक्षा करने लगे कि किस विषय पर चर्चा करेंगे। समय निर्धारित किया गया कि सुबह आठ बजे से 11 बजे तक हवन और सम्बन्धित बातें। 3.30 बजे से 8.30 बजे तक वेद सम्बन्धी बातें होंगी। 14 मार्च को ही पण्डाल, हवन कुण्ड, सम्बन्धित सामग्री की सारी व्यवस्था कर ली गई। 15 मार्च को निर्धारित समय पर सभी लोग आ गए। समयानुसार कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। यों तो उक्त कार्यक्रम एक गांव में किया गया फिर स्थानीय महिलाएं और पुरुष सैकड़ों की संख्या में जमा हो गए। अपरान्हकाल का कार्यक्रम और आकर्षक तथा प्रभावकारी रहा। यहां के लोग भागवत कथा, विभिन्न पुराण और रामायण से सम्बन्धित थे। वेद की बात से कोसों दूर थे। ज्यों–ज्यों वेद की बातें होती तो हमारे लिए जीवनोपयोगी बातें यही हैं स्वीकार करते जाते थे। प्रतिदिन अर्थात् 19 मार्च के संध्याकाल 7.00 बजे रात्रि तक हमारों की संख्या में लोग (नर–नारी) उपस्थित रहे। ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ और स्वास्थ्यवर्द्धक व्यायाम का प्रत्यक्ष प्रसारण कर लोगों के बीच एक चमत्कारी कार्य किया।

अन्त में विदाई की कुछ वस्तुऐं सभी की उपस्थिति में ही विभिन्न सज्जनों द्वारा प्रदान किया गया। स्थानीय लोगों से इस कार्यक्रम की प्रतिक्रिया करने के लिए आग्रह किया गया तो दो व्यक्ति एक विलक्षण महतते जी और एक घुरन महत्तो जी ने कहा हमारे पंडित हमें भ्रमजाल में फंसा कर रखे हैं वास्तविक मानशोचित्त कार्यो से कोसों दूर रखकर अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए गलत रास्ता अपनाने पर हमें बाध्य कर दिए हैं। वैदिक राह पर चलकर हम अपने आचरण में सुधार कर सकते हैं। सभी ने स्वीकार किया। 20 मार्च को सब अपने अपने निर्धारित जगह पर पहुंचने के लिए चल पड़े।

अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियाँ

स्वामी सर्वानन्द जी के जन्मोत्सव पर हुआ वेद विज्ञान सम्मेलन

सदानन्द सरस्वती
दीनानगर (गुरुदासपुर) पंजाब

सन्त शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी के 19 वे जन्मोत्सव के उपलक्ष में 11 से 13 अप्रैल तक दयानंद मठ, दीनानगर में वेद विज्ञान सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर मठ के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी की अधयक्षता में आर्य जगत के विभिनन प्रान्तों से पधारे सन्यासियों, भजनोपदेषकों तथा मठपदेशकों द्वारा 1 से 11 अप्रैल तक लगातार क्षेत्र भर में वेद प्रचार यात्रा भी आयोजित की गई। कार्यक्रम में स्वामी सर्वानन्द स्मृति बॉलीबाल प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। सम्मेलन में 1 स 13 अप्रैल तक अर्थवेद पारायण यज्ञ भी पूर्ण वैदिक विधि विधान के साथ सम्पन्न हुआ।

समारोह में आर्यजगत की अनेक विभूतियां सम्मानित की गई। इस बेला में आचार्य वेद प्रिय शास्त्री (राजस्थान) के स्वामी स्वतंत्रानन्द आचार्य सम्मान, आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) को स्वामी सर्वानन्द सिद्धान्त शिरोमणि सम्मान तथा पंडित नरदेव संगीत, रत्न (राजस्थान) को पंडित निरजंन देव महापदेशक सम्मान प्रदान किया गया। सम्मेलन में वक्ताओं ने वेद विज्ञान के विभिन्न पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा कहा कि वेद में ज्ञान विज्ञान का विशद भण्डार है। समारोह के उपरान्त ऋषि लंगर की भी भव्य व्यवस्था की गई।

संस्कृत शिक्षण शिविर सम्पन्न

नवलपुर (बिजनौर) उ०प्र०। वैदिक कन्या गुरुकुल नवलपुर में आठ दिवसीय संस्कृत शिक्षण शिविर 21 से 28 अप्रैल तक आयोजित किया गया। यह जानकारी देते हुए गुरुकुल के प्रबन्धक सुशील त्यागी ने बताया कि शिविर में प्रतिभाग हेतु केवल 500/–रू0 का शुल्क रखा गया था। शिविर में प्रातः चार बजे जागरण के साथ ही दैनिक दिनचर्या के उपरान्त योगासन, प्राणायाम व यज्ञ, संस्कृत प्रशिक्षण तथा वैदिक सिद्धान्तों का सम्यक ज्ञान प्रदान किया गया।

प्यारा ऋषि –

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की प्रेरक घटनाओं पर आधारित चित्रकथा
प्रकाशक : आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली से साभार (क्रमशः ...)

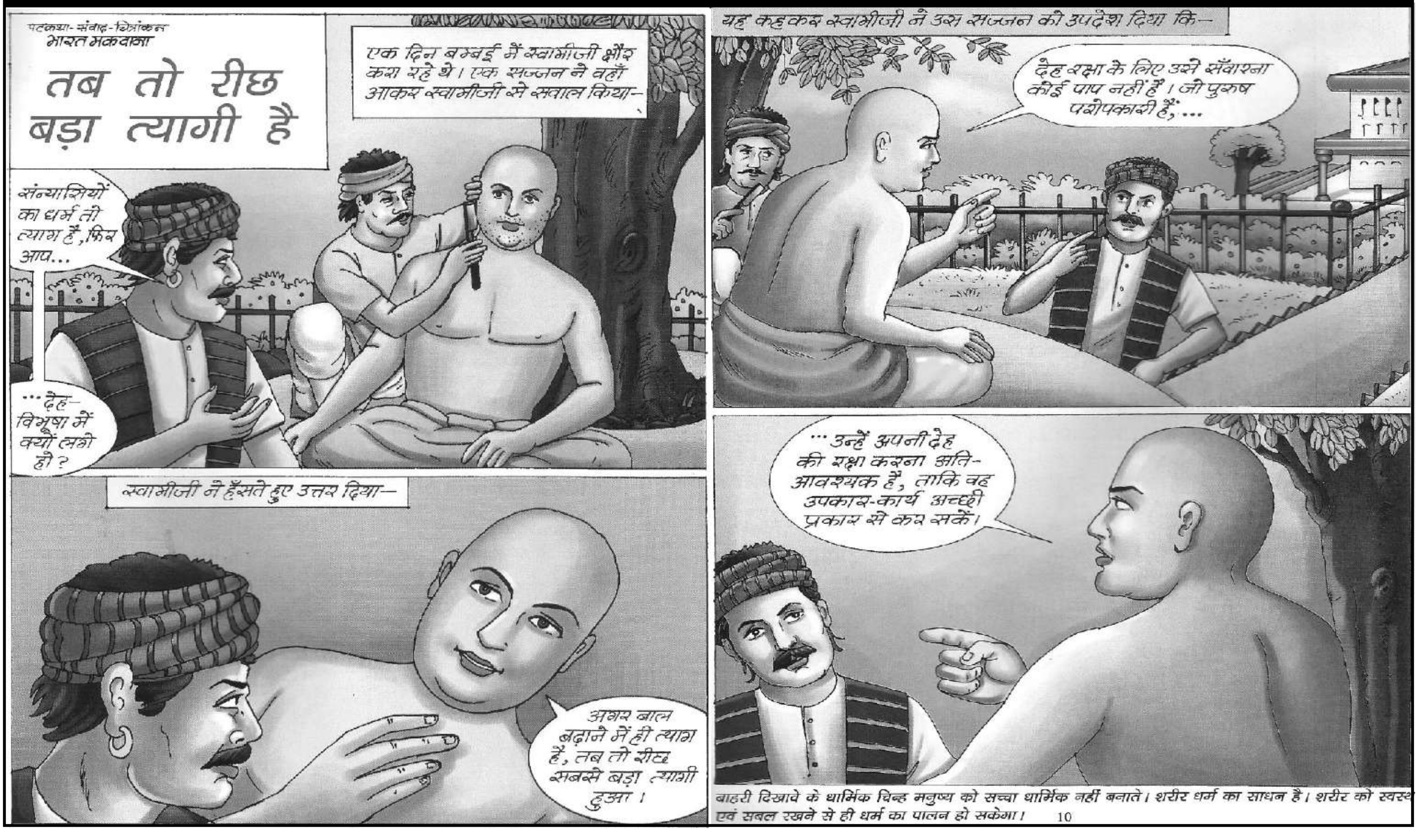

देश-विदेश के आर्यसमाजों एवं आर्य महानुभावों के नाम

आर्यावर्त केसरी के प्रधान सम्पादक

डॉ० अशोक कुमार आर्य का एक विशेष पत्र

कृपया इस पत्र को अवश्य पढ़ें तथा पढ़ने के बाद अपनी प्रतिक्रिया से मोबा. नं0 9412139333 पर अवगत भी कराएं।

देश-विदेश स्थित आर्यसमाजों के मान्य श्री प्रधान जी/ मंत्री जी!
एवं
मान्य श्री आर्यप्रवर महानुभाव!

सादर-सप्रेम नमस्ते;

प्रिय महोदय,

संसार का कल्याण करने के उद्देश्य से युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1875 में आर्य समाज की नींव रखी। इसके लिए आर्य समाज के 10 सार्वभौमिक नियमों की व्यवस्था भी की। आर्य समाज ने स्वदेशी, स्वभाषा, स्वराज्य, संस्कृति, शिक्षा, संस्कार, नारी-मुक्ति, छुआछूत एवं मद्य निषेध, सामाजिक समरसता, एकता, अखण्डता, राष्ट्रवाद, बंधुता, या यह कहें कि जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं, जिसमें अपना अभूतपूर्व योगदान न दिया हो। वस्तुत: इसीलिए आर्य समाज की भूमिका सदैव अग्रणी रही है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि यदि आर्य समाजियों में कहीं शिथिलता हो, तो वह दूर की जाए, आर्य समाज की गतिविधियों से समाज व राष्ट्र को जोड़ा जाए तथा अपनी गतिविधियों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए। इस दृष्टि से जैसा कि आपको विदित ही है कि आधुनिक युग मीडिया का युग है। कहावत है कि 'जंगल में मोर नाचा, किसने देखा', अर्थात् मीडिया प्रसारक की भूमिका निभाती है।

आर्यावर्त केसरी एक ऐसा पत्र है, जो आर्य समाज की गतिविधियों, कार्यक्रमों व उपलब्धियों को विभिन्न स्तम्भों के रूप में प्रकाशित करता है, जैसे- हमारे गुरुकुल, हमारे प्रतिष्ठान, ऐसे होते हैं आर्य, आर्ष साहित्य समीक्षा, आर्यजगत के प्रकाशन, लोकोपयोगी न्यास (ट्रस्ट), मूर्धन्य संन्यासी, स्वनामधन्य क्रान्तिकारी, अमर शहीद, विभिन्न प्रकल्प, तपस्वी साधक, गतिविधियों के समाचार, आध्यात्मिक व सामयिक, आलेख व काव्य रचनाएं आदि-आदि। इस प्रकार के स्तम्भों के प्रकाशन से आर्य जगत की समृद्धि, उसकी वृहद् योजना, कार्यक्रमों की भावी रूपरेखा व गतिविधियों की समस्त जानकारी आम जन तक पहुंचती है, जिससे समाज संगठित भी होता है और सुदृढ़ भी, इससे प्रेरणा भी मिलती है और उत्साह भी।

अत: यह सुस्पष्ट है कि यदि आर्य जगत की पत्र-पत्रिकाओं सहित आर्यावर्त केसरी का भी प्रचार-प्रसार बढ़ेगा, तो यह आर्य समाज, वैदिक दर्शन व महर्षि दयानन्द सरस्वती के चिन्तन-मनन के प्रचार-प्रसार में बहुत सहायक होगा। लेकिन पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार में एक बड़ी अड़चन यह आती है, और बहुधा ऐसी शिकायतें सम्मानित पाठकों की ओर से आये दिन सुनने व देखने में आती रहती हैं कि उन्हें पत्र-पत्रिकाएं डाक द्वारा समय से प्राप्त नहीं होतीं या कभी-कभी मिलती हैं। चूंकि ये सभी पत्र-पत्रिकायें, जिनमें आर्यावर्त केसरी भी सम्मिलित है, अपने सभी सम्मानित पाठकों को साधारण डाक से अर्थात् 25 पैसे का डाक टिकट लगाकर, भेजी जाती हैं, जिस कारण उनकी कई बार पहुंचने की गारण्टी नहीं रह पाती। इसलिए हमने इसका एक उपाय सोचा है कि एक ही स्थान पर एक ही समाज से जुड़े यदि कम से कम 25 या 30 वार्षिक या आजीवन सदस्य बना दिये जाएं, तो आर्यावर्त केसरी नियमित रूप से रजि0 पैकेट या कोरियर के माध्यम से निश्चित व समयबद्ध ढंग से मिलता रहेगा।

उस पैकेट से सम्मानित सदस्यों तक आर्यावर्त केसरी पहुंचाने का गुरुतर एवं पावन दायित्व आप सरीखे उत्साही महानुभावों को उठाना होगा। इसके लिए यदि आप चाहेंगे, तो आपको आर्यावर्त केसरी की ओर से आपका एक फोटोयुक्त प्रेस परिचय कार्ड (Press Identity Card) जिसकी बहुत बड़ी अहमियत तथा मान्यता होती है, जारी किया जाएगा, जिससे आप अपने ग्राम, नगर, शहर, तहसील, जनपद या क्षेत्र में आर्यावर्त केसरी के मान्यता प्राप्त प्रेस प्रतिनिधि के रूप में भी भूमिका निभा सकते हैं। इतना ही नहीं, इस कार्य के लिए आप अन्यों को भी प्रेरित कर सकते हैं। उन्हें भी इसी प्रकार का फोटोयुक्त प्रेसकार्ड जारी किया जाएगा। इस कार्ड की अवधि प्रारम्भ में 1-1 वर्ष के लिए होगी है, जो बाद में बढ़ाई जाती रहेगी। आपसे हमारी अपेक्षा केवल सदस्यता के विस्तार की ही नहीं है, अपितु गतिविधियों के समाचार, विचारपरक लेख, व विभिन्न मुद्दों पर प्रतिक्रिया तथा साक्षात्कार आदि भेजते रहने की भी होगी। फिलहाल हम आपको इतना आश्वस्त अवश्य कर सकते हैं कि आपके द्वारा प्रेषित एक-एक शब्द को सदैव यथोचित स्थान मिलता रहेगा। तो आइए, फिर देर क्यों, आज से ही इस महान मिशन में सहयोगी बनें व आर्यसमाज के संकल्प नाद 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को साकार रूप देने का एक विराट अभियान छेड़ें। धन्यवाद;

भवदीय

डॉ० अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी,
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उप्र)
मो. : 9412139333

नोट : आप सदस्यों की सूची बनाकर अविलम्ब हमें भेजिए साथ ही, केसरी का बंडल किस पते पर जाएगा, यह भी लिखिए। सम्मानित सदस्यों के लिए वार्षिक सदस्यता की सहयोग राशि 100/- है। आजीवन (10 वर्षीय 1100/- तथा संरक्षक सदस्यता राशि 3100/-) है। आप जैसा भी उचित समझें, भेज सकते हैं।

यहां तक कि सम्मानित सदस्यों को एक वर्ष तक आर्यावर्त केसरी की आपूर्ति करने के बाद भी। जैसा आप उचित समझें। हमारा उद्देश्य कोई आर्थिक लाभार्जन नहीं है।

यह कार्य अत्यन्त व्यय, समय व श्रमसाध्य है। लक्ष्य केवल एक है कि कैसे आर्यत्व की मिशनरी भावनाएं जन-जन तक पहुंचें। यकीन मानें कि हम आपके विश्वास व पुरुषार्थ को कभी भी ठेस नहीं पहुंचने देंगे।

यदि एक ही स्थान पर एक ही समाज से जुड़े कम से कम २५ या ३० वार्षिक या आजीवन सदस्य बना दिये जाएं तो आर्यावर्त केसरी नियमित रूप से रजिस्टर्ड पैकेट या कोरियर से मिलता रहेगा।

ये हैं आर्यावर्त केसरी को रजिस्टर्ड बंडलों से भेजने की योजना

- इसके लिए एक ही स्थान पर चाहिए कम से कम 25 से 35 सम्मानित सदस्यों की व्यवस्था।
- पैकेट से भेजे गये पत्र सम्मानित सदस्यों तक कैसे पहुंचें, यह व्यवस्था आपको बनानी है।
- पत्र रजि0 बण्डलों से आप तक पहुंचेगा यथासमय, यह तय है।
- केवल सदस्यता सूची भेजिए, सदस्यता राशि वर्षान्त में भी भेज सकते हैं अर्थात् एक वर्ष की अवधि पूर्ण होने पर भी। जैसा आपको सुविधाजनक लगे।
- कृपया इस प्रसार मिशन में सहयोगी बनें।
- आपका पावन योगदान ऋषि के मिशन को निश्चय ही गति देगा। धन्यवाद,

-सम्पादक

तो आइये, फिर देर क्यों? आज से ही इस महान मिशन में सहयोगी बनें तथा आर्यसमाज के संकल्प नाद 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को साकार रूप देने के लिए आर्यावर्त केसरी से जुड़ें।

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट,
अमरोहा (उ.प्र.), दूर.-05922-262033, चल.- 09412139333

वैश्विक पटल पर योगक्रान्ति

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल एवं स्वामी रामदेव की प्रेरणा से विश्वभर में 21 जून को जब विश्व भर में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की धूम मची तो एक विश्व रिकार्ड कायम हुआ और लगभग दो अरब लोगों ने सामूहिक योग कर, एक नए इतिहास की संरचना की। अब देखना यह है कि इस वर्ष 21 जून को हम किस प्रकार योग के परचम को विश्व स्तर तक फहराने में कामयाब रहते हैं। निश्चय ही, भारतीय योग ने पूरे विश्व को स्वस्थ जीवन शैली अपनाने का जो संदेश दिया है वह सदियों बाद भी करोड़ो लोगों के जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। इसा पूर्व दूसरी शताब्दी में जन्में महर्षि पंतजलि को योग का जनक कहा जाता है। हजारों वर्षों पहले उन्होंने जो क्रियाएं मानव शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बताई थी, वह आज भी उतनी सटीक और वैज्ञानिक है, जितनी आज से हजारों वर्ष पूर्व थीं। आधुनिक युग में व्यक्ति व्यायाम केवल शरीर बनाने के लिए करता है। बड़े-बड़े जिम में जाता है, शरीर को शक्ति पेय या भारी भोजन से, पाउडरों से गठीला बनाने की कोशिश करता है, परंतु यह सभी उपाय गौण हैं, जो कुछ समय के लिए सामने दिखते हैं और बाद में शरीर को भारी नुकसान पहुंचाते हैं। केवल योग ही है जो मनुष्य के शरीर, मन, और आत्मा को सबल एवं सशक्त बनाता है। योग एक अमूल्य निधि है।

इसमें कोई दो मत नहीं कि विश्व ने आज योग के महत्व को समझा है और संयुक्त राष्ट्र ने 121वें संयुक्त राष्ट्र दिवस के रूप में हर वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की घोषणा की। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मून ने विश्व से अपील की कि वह इससे होने वाले लाभों को व्यक्तिगत तंदुरूस्ती के साथ जनस्वास्थ्य में सुधार लाने, शांतिपूर्वक सम्बन्धों को बढ़ावा देने और सभी के लिए सम्मान जनक जीवन में प्रवेश के रूप में देखें। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सितम्बर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने पहले सम्बोधन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के औचित्य का प्रस्ताव किया था। महासभा ने इस प्रस्ताव को रिकार्ड समय में स्वीकार किया। महासभा के 193 देशों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया और 172 देश इसके सह-प्रयोजक बने। किसी ने इसका विरोध नहीं किया। प्रस्ताव का समर्थन करने वाले देशों में 47 इस्लामिक देश भी हैं। दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाना भारतीय योग को अंतर्राष्ट्रीय मान्यता मिलना है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में भी इसका आयोजन किया गया और संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून के साथ भारत के विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज भी इसमें शामिल हुई।

गत वर्ष 21 जून को भारत के 650 जिलों में 2 हजार से भी अधिक योग शिविर लगाए गये। सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर उनका आयोजन किया गया। भारत सरकार ने विदेशों में भी योग प्रशिक्षकों को भेजा ताकि वे उन देशों में जाकर योगाभ्यास कराएं। देश की राजधानी में राष्ट्रपति भवन और संसदभवन के निकट राजपथ पर प्रधानमंत्री के सान्निध्य में 38 बलों के सदस्य भी शामिल थे। केन्द्रीय मंत्रियों ने अपने-अपने चुनाव क्षेत्र में लगे योग शिविर में हिस्सा लिया। विश्व के 256 शहरों में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस इतना सफल होगा, इसकी कल्पना शायद ही किसी ने की हो। इस अवसर पर योग के विश्व रिकार्ड भी बने। भारत ही नहीं, अपितु विश्व के अन्य पर्याप्त देशों के लोगों ने भी इस अवसर पर योग में उत्साह के साथ अपनी रुचि दिखाई। उम्मीद है कि इस वर्ष ऐसे रिकार्डों में वृद्धि ही होगी। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि योग का पूरे विश्व में जिस तरह से स्वागत और सम्मान हुआ वह प्रशंसनीय है। भारत ने योग के माध्यम से पूरे विश्व को जोड़ने का महान कार्य किया है। अब अर्द्धसैनिक बलों एवं पुलिस बलों के लिए भी योग को अनिवार्य किया जा रहा है। सभी स्कूलों में भी योग को पाठयक्रम के साथ जोड़ा जा रहा है। जो एक सही कदम है। प्रत्येक भारतवासी को योग से जुड़कर भारत के प्रत्येक हिस्से को मजबूत करना चाहिए और भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनके मंत्रीमंडल के सभी सदस्यों को इस सराहनीय कदम की सफलता पर धन्यवाद देना चाहिए ताकि भारत विश्व के मानचित्र पर एक विशेष स्थान प्राप्त कर सके। वस्तुत: जब योग का संदेश जन-जन तक पहुंचेगा, तो एक विराट विश्वक्रान्ति होगी, ऐसा निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है। वास्तव में योग क्रान्ति से विश्व भर में एक नई चेतना का अभ्युदय हुआ है। इसके लिए स्वामी जी बधाई के पात्र हैं। आओ हम सब योग की महत्ता को जानकर इस दिशा में और भी अधिक गतिशील हों।

महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी

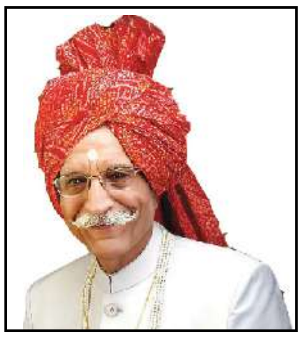

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी

आर्य समाज के एक समर्पित सदस्य के रूप में कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी की अपनी एक अलग ही पहचान है। जब कभी आर्य समाज के प्रति इस विशेष अपनत्व को लेकर चर्चा होती है, तो खुद–ब–खुद इनके होंठों पर मुस्कराहट थिरक उठती है और यही सुनने को मिलता है–मेरे पास जो कुछ भी है, वह आर्य समाज की बदौलत है और मेरा जो कुछ भी है, आर्य समाज के लिये हैं।

आपको यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि महाशय धर्मपाल जी का आर्य समाज के सम्बन्ध नौ दशकों से भी पुराना है। पिता महाशय चुन्नीलाल जी की आर्य समाज में दृढ़ आस्था थी, इसलिए कम उम्र में ही महाशय धर्मपाल जी ने आर्य समाज मंदिर जाना शुरू कर दिया और इसके साथ ही उत्तम संस्कार रूपी शिक्षा–दीक्षा का शुभारंभ हो गया। पूजा–प्रार्थना, हवन–यज्ञ, वेदपाठ, संध्यावंदन आदि में महाशय धर्मपाल जी की बचपन में ही पूरी रूचि थी और समय के साथ–साथ यह रूचि और तेजी से बढ़ती गयी। इसके साथ ही दया, परोपकार और सेवा जैसे सुंदर गुण भी इनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग बन गए। महर्शि दयानन्द जी के पावन जीवन चरित और उनके पावन ग्रंथों का मनन इनकी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा रहा और आज की तारीख तक है। शायद यही वजह है कि परमात्मा ने इन्हें सद्मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और ये सदैव उन्नति पथ पर अग्रसर है।

सियालकोट में आर्य समाज के प्रति जो लगाव पैदा हुआ, वह देश विभाजन के बाद दिल्ली आकर भी ज्यों–का–त्यों बना रहा, बल्कि यूं कहें कि और भी बढ़ता गया। दिल्ली में नए सिरे से अपना कारोबारी सफर शुरू करने के दौरान लाख व्यस्तताओं के बाबजूद महाशय जी आर्य समाज की हर गतिविधियों में पूरी मुस्तैदी से खड़े रहे। यदि भाव सुंदर हो, तो अभाव टिक नहीं पाता–समय के साथ–साथ इनका एमडीएच का कारोबार दिन दूना रात चौगुनी विस्तार पाता गया और इसके साथ ही आर्य समाज के प्रति इनका योगदान भी बढ़ता गया। महर्शि दयानन्द जी के एक सच्चे अनुयायी के रूप में जहाँ इन्होंने उनके पावन आदर्शो को दृढ़ता से अपनाए रखा, वहीं महर्शि जी ने कल्याणकारी विचारों व आदर्शो के प्रचार–प्रसार को लेकर भी हमेशा समर्पित रहे। इस अभियान को राश्ट्रीय–अतंरराश्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने के लिए प्रचुर आर्थिक अनुदान देते रहे।

एमडीएच जैसी विशाल कंपनी के सर्वेसर्वा के रूप में महाशय धर्मपाल जी का प्रत्येक क्षण बहुत ही महत्वपूर्ण है, लेकिन यह आर्य समाज के प्रति इनका अटूट लगाव ही है, जो इन्हें हर गतिविधि में सक्रिय भागीदार बनाए रखता है। वेद ज्ञान, आर्य समाज व महर्शि दयानन्द जी के विचारों को व्यापक विस्तार देने और सबको सुखी बनाने के लिए आज देश में कई संस्थान, संस्थाएं, चिकित्सालय, गौशालाएं, विद्यालय, छात्रावास, वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम आदि एमडीएच परिवार के सहयोग से संचालित हो रहे हैं, जिसमें एमडीएच परिसर, निर्वाण न्यास, अजमेर (राजस्थान), महाशय धर्मपाल एमडीएच दयानंद आर्य विद्या निकेतन, बामनिया (म0प्र0), एमडीएच गौशाला ऋशि उत्थान, पुश्कर रोड, अजमेर (राजस्थान), महाशय धर्मपाल आर्य स्थायी निधि, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (नई दिल्ली), महाशय धर्मपाल संस्कृत भवन, गुरू विरजानंद संस्कृतकुलम् हरिनगर (नई दिल्ली), सत्यार्थ प्रकाश स्तंभ, एमडीएच परिसर, उदयपुर (राजस्थान), महाशय धर्मपाल एमडीएच वेद अनुसंधान केन्द्र, कालीकट, कोझीकोड (केरल), महाशय धर्मपाल दयानंद विद्या निकेतन, भामल (म.प्र.) महाशय धर्मपाल एमडीएच दयानंद विद्या निकेतन, देवधर (झारखंड), महाशय धर्मपाल एमडीएच दयानंद आर्य विद्या निकेतन, धनश्री (आसाम), महाशय संजीव आराग्य केंद्र, ऋशिकेश (उत्तराखंड) आदि प्रमुख है। इतना ही नहीं महाशय जी का यह कहना है कि इस अभियान को और भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि पूरा विश्व आर्य समाज के पावन सिद्धांतों को सहर्श अपना सके। अभी 25 से 28 अक्टूबर 2018 को आयोजित होने वाले अंतरराश्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2018 के आयोजन को सफल बनाने हेतु भी महाशय जी की प्रेरणा और आशीर्वाद सराहनीय है। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि महाशय धर्मपाल जी पर सदैव उनकी कृपादृश्टि बनी रहे, ताकि सेवा और सहयोग की यह पावन श्रृंखला पूर्ववत जारी रह सके।

जनवाणी

वैदिक संस्कृति में विशेष योगदान–

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली– २०१८

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य बन्धुओ!

सादर नमस्कार।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आर्य समाज के जनसहयोग से चतुरदिवसीय आर्य कार्यक्रम ऋषित्व वैदिक संस्कारशाल संस्कृति के माध्यम से, ऋषित्व ज्ञान विज्ञान से, शिक्षा आर्यावर्त प्राचीनतम सभ्यता का समावेश प्राप्त हुआ है। इस शिक्षा को स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पुन: प्रयास से, भारतीय सभ्यता की रूपरेखा से, श्रेष्ठ नैतिकता और आत्मबोध, आत्मसाक्षात्कार से परिष्कृत किया है। इस महासम्मेलन से वेदों की ऋचाओं द्वारा गूंज यज्ञमय यज्ञ पण्डप मण्डल यज्ञशाला से श्लोकों की मधुर गायन सूक्ष्म तरण स्पन्दन गति से यजमानों द्वारा साक्षात यज्ञवेदी से ईश्वरीय कृत प्रकृति का अनुभूत अनुभव सृष्टि का अवलोकन मानन्द प्राप्त करते हुए मानव का जीवन उत्कृष्ट व श्रेष्ठ है।

सर्वश्रेष्ठ इस सम्मेलन के सर्वत्र कार्यक्रम अति योग्यपूर्ण थे। रोहिणी पार्क में विशेष होम यज्ञ मण्डप का विहंगम दृश्य अपनी एक अनोखी विलक्षण छटा बिखेर रहा था। जैसे धरती पर स्वर्ग का अवतरण हुआ हो। स्वर्गीय भावना को यज्ञमय द्वारा ओज, यज्ञसूर्य, अश्वमेध यज्ञ यज्ञशाला के रूप में परिणीत थी।

आर्य जीवन उच्च उद्देश्यों के लिए समर्पित है। विश्व के आर्य बन्धुओं द्वारा तन, मन, धन, सहयोग से यह सम्मेलन सफलता के शिखर पर रहते हुए हमें आर्य संस्कृति संस्कारशाला की प्रेरणा देता है। भविष्य में इस सहयोग हेतु सभी का योगदान अपेक्षित है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सहयोगी आर्य संगठनों का हार्दिक शुभकामनाओं के साथ ही अभिवादन अभिनन्दन है। धन्यवाद।

-रंजन कुमार बहल,
स्ट्रीट/ अपोजिट- सैंट सोल्जर
पब्लिक स्कूल कलानोर रोड,
गुरदासपुर (पंजाब)
मोबा० : ९९१५४६०३६९

महर्षि दयानन्द सरस्वती का वास्तविक जन्मदिवस

ई० आदित्यमुनि वानप्रस्थ

आर्य जगत पिछले लगभग 30 वर्षों से अपनी शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के एक निर्णयानुसार आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्मदिन प्रतिवर्ष फाल्गुन कृष्ण 10 संवत् 1881 (उत्तर भारतीय चैत्र संवत्) तदनुसार 12 फरवरी 1825 को उनका जन्म हुआ मानकर मनाता चला आ रहा है। लेकिन यह सर्वथा गलत है, क्योंकि ऋषि दयानन्द ने पूना (महाराष्ट्र) में 4 अगस्त 1875 को दिये गये अपने पूर्वचरित्र संबन्धी पन्द्रहवें प्रवचन में कहा था कि-

(अ) इस समय (अर्थात् 4 अगस्त, 1875 ई0 को) **मेरा वय ४९-५० वर्ष को होगा।**

द्रष्टव्य- महर्षि दयानन्द सरस्वती के शास्त्रार्थ और प्रवचन (शास्त्रार्थ संपादक डॉ0 भवानीलाल भारतीय और प्रवचन अनुवादक पं0 युधिष्ठिर मीमांसक, प्रथम संस्करण, आश्विन संवत् 2039, पृ0-433)

(ब) हल्ली माझे वय ४९-५० वर्षाचे असेल।

द्रष्टव्य- प्रबोधन काळीताल, पुणे प्रवचन (सम्पादक प्रा0 आचार्य सत्यकाम पाठक, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, नांदेड़, प्रथम संस्करण, संवत् 2040, पृ0-123)

महर्षि दयानन्द के दो भाषाओं (हिंदी एवं मराठी) में उपलब्ध उक्त कथनों से स्पष्ट है कि 4 अगस्त 1875 ई0 को उनकी आयु 49 वर्ष से अधिक परन्तु 50 वर्ष से कुछ कम थी। लेकिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मान्य जन्म दिनांक 12 फरवरी 1825 ई0 मानने से तो 4 अगस्त 1875 को वे 50 वर्ष से अधिक परन्तु 51 वर्ष से कम वय के सिद्ध होते हैं, जो स्वयं आर्य समाज के संस्थापक के ही कथन के विरुद्ध है। अत: फाल्गुन कृष्ण 10 संवत् 1881 (चैत्री संवत्) की यह जन्मतिथि ही गलत है।

2. महर्षि दयानन्द सरस्वती गुजराती थे और उनका जन्म उसी प्रान्त के मोरवी राज्य के टंकारा नगर में एक गुजराती ब्राह्मण के परिवार में हुआ था, जहां कार्तिकी (कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होने वाले) गुजराती संवत् का प्रचलन है। अत: स्वामी दयानन्द के जन्म पर उनके माता-पिता ने उनकी जो जन्मपत्री बनवायी थी, वह उस प्रदेश में प्रचलित गुजराती पंचांग के अनुसार ही बनवायी थी, और बालक के कुछ बड़ा होने पर वही उनके माता-पिता ने उन्हें भी बतायी थी। अन्यथा किसी बालक के लिए अपना जन्मदिन जानने का अन्य कोई उपाय नहीं होता है।

आगे जब स्वामी दयानन्द को अपनी आत्मकथा लिखने का अवसर मुंबई से प्रकाशित होने वाले मासिक अंग्रेजी पत्र 'थ्योसोफिस्ट' के संपादक कर्नल आल्काट और मैडम ब्लेवटस्की ने प्रदान किया, तो उन्होंने सर्वप्रथम इस अंग्रेजी पत्र के अक्टूबर, 1879 के अंक के पृष्ठ- 9 पर लिखा कि **"It was in a Brahmin family of the Oudichya caste, in a town belonging ot the Rajah of Moorwee, in province of Kattiawar, that in the year of Samvat, 1881. I, known as Dayanand Saraswati, was born."** यह अंग्रेजी अनुवाद स्वामी दयानन्द सरस्वती के स्वहस्त से लिखित इस देवनागरी वाक्य का अनुवाद था कि "संवत् 1881 के वर्ष में मेरा जन्म दक्षिण गुजरात प्रान्त, देश काठियाबाड़ का जमोकठा देश, मोरवी का राज्य औदीच्य ब्राह्मण के घर में हुआ था।" इस वाक्य में व्यक्त 1881 का संवत् नि:संदेह वही गुजराती संवत है, जो उनके जन्मस्थान पर तब भी प्रचलित था और अग भी प्रचलित है, तथा जिसे ही स्वामी दयानन्द के माता-पिताने उन्हें उनके बचपन में ही बता रखा था। लेकिन उत्तर भारत के बोली नगर में 26 अगस्त, 1879 ई0 (भाद्रपद शुक्ल 9, मंगलवार) को लिखे गये इस संवत् को उत्तर भारतीय लेखकों ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होने वाले अपने संवत् को ग्रहण करके उनका जन्म 1881-56= 1824 में हुआ होना प्रचारित कर दिया। बाद में जब उनका ध्यान स्वामी दयानन्द सरस्वती के आत्मकथोक्त इन वाक्यों पर पड़ा कि "फिर माता-पिता ने मुझे बुलाके विवाह की तैयारी कर दी। तब तक इक्कीसवां वर्ष भी पूरा हो गया। (बिना अपनी जन्मतिथि जाने स्वामी दयानन्द द्वारा ऐसा निश्चयात्मक नहीं किया जा सकता था)। जब मैंने निश्चित जाना कि अब विवाह किये बिना कदाचित् न छोड़ेंगे। फिर गुपचुप संवत् 1903 के वर्ष घर छोड़के संध्या के समय भाग उठा।" तब उत्तर भारतीय लेखकों में से एक स्व0 पं0 भीमसेन शास्त्री (कोटा निवासी) ने विचार करके ऋषि दयानन्द की जन्मतिथि 12 फरवरी, 1825 (फाल्गुन कृष्ण 10, संवत् 1881 (चैत्र संवत्) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से मान्य करा ली, क्योंकि तब ही 1881+21=1902 संवत् की पूर्ति होकर अगली चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से संवत् 1903 में उनका गृह त्याग करना मान्य किया जा सकता था। इस तिथि के निर्धारण में उस दिन मूल नक्षत्र का होना भी एक कारण बना, क्योंकि स्वामी दयानन्द सरस्वती का बचपन का नाम मूलशंकर (मूल नक्षत्र में जन्म लेने से) भी मान्य हो चुका था।

3. 1985 के अप्रैल मास में मुझे कोलकाता के एक परिवार से पं0 श्रीकृष्ण शर्मा, आर्य मिशनरी एवं भूतपूर्व मंत्री, आर्यसमाज, टंकारा (गुजरात) की संवत् 2020 में मुंबई से प्रकाशित एक पुस्तक 'महर्षि दयानन्द स्मारक का इतिहास' हाथ लगी, जिसमें मुझे यह उल्लेख प्राप्त हुआ कि "महर्षि (मूलशंकर) की जो जन्मकुण्डली उनके पारिवारिक जनों से प्राप्त हुई है, उसके अनुसार महर्षि की जन्मतिथि भाद्रपद शुक्ल नवमी ही है, परन्तु स्व0 अखिलानन्द जी ने इस तिथि को ग्रहण करते हुए अपने 'दयानन्द दिग्विजय' नामक सुप्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ में महर्षि का जन्म चैत्री संवत् 1881 लिखा है, जो वास्तव में सौराष्ट्र और गुजरात में प्रचलित कार्तिकी संवत् से छ: मास पीछे है। महर्षि की जन्मकुण्डली के अनुसार उनका जन्म कार्तिकी संवत् 1881 की भाद्रपद शुक्ल नवमी को प्रात: 3 बजकर 30 मिनट पर मूल नक्षत्र, धनुराशि में हुआ था। अत: नक्षत्र पर से उनका बाल्यनाम मूलशंकर था। परन्तु उनका राशिनाम धनेशजी त्रिवेदी था। महर्षि की जन्मकुण्डली निम्नप्रकार है-

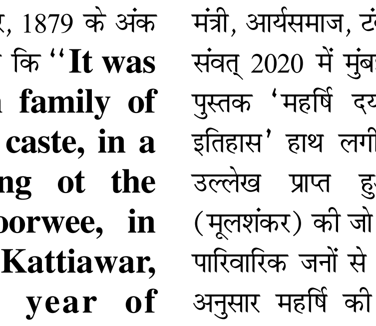

इसके अनुसार महर्षि की जन्म तारीख 19.9.1825 की मध्यरात्रि के पश्चात् तारीख 20.9.1825 को प्रात:काल 3 बजकर 30 मिनट पर है।

हमने उक्त जन्मकुण्डली का दिल्ली के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी श्री कृष्णकुमार जोशी (114, प्रताप विहार, पार्ट-1, दिल्ली-86) और ग्रेटर नोएडा के वैदिक ज्योतिषी आचार्य दार्शनेय लोकेश (सी-276, गामा-1, ग्रेटर नोएडा- 201308) से परीक्षण कराया, जिसमें इन दोनों ज्योतिषियों ने ही इसे कुछ संशोधनों के साथ सही पाया। इन दोनों ज्योतिषियों द्वारा संशोधित रूप से बनाई गयी ऋषि दयानन्द की जन्मकुण्डलियां संलग्न है।

इन्होंने मुझे लिखा है कि "मैं इसलिए इस 20.9.1825 ई0 (प्रचलित और तात्कालिक पंचांगों के कार्तिकादि संवत् 1881 के भाद्र शुक्ल नवमी, मंगलवार) की तिथि को महर्षि के जन्मदिन के रूप में निर्धारण की प्रामाणिकता देख रहा हूं, क्योंकि इसमें पूरी ग्रह स्थितियों का समायोजन देखा जा रहा है। अन्य लोग केवल मूल नक्षत्र की चर्चा करके ही निष्कर्ष पर पहुंचने की कोशिश करके रह जाते हैं। वे भूल जाते हैं कि मूल संज्ञक नक्षत्र तो एक महीने में छ: होते हैं। जबकि समूची ग्रह संयोजन स्थिति एक और केवल एक ही होती है। इसलिए सभी आर्यजनों को अब किसी तरह से महर्षि की जन्मतिथि के निर्धारण में शंका नहीं रहनी चाहिए। देश और दुनिया के आर्यजनों को मेरा कहना है कि यह समस्या अब सर्वदा और सभी के लिए स्वीकार्य रूप से हल हो चुकी है। वैदिक पंचांग में इस तिथि को आश्विन शुक्ला नवमी को दर्शाया जाएगा और सभी देशवासियों को इस तिथि को 'दयानन्द नवमी' के रूप में मनाना चाहिए।"

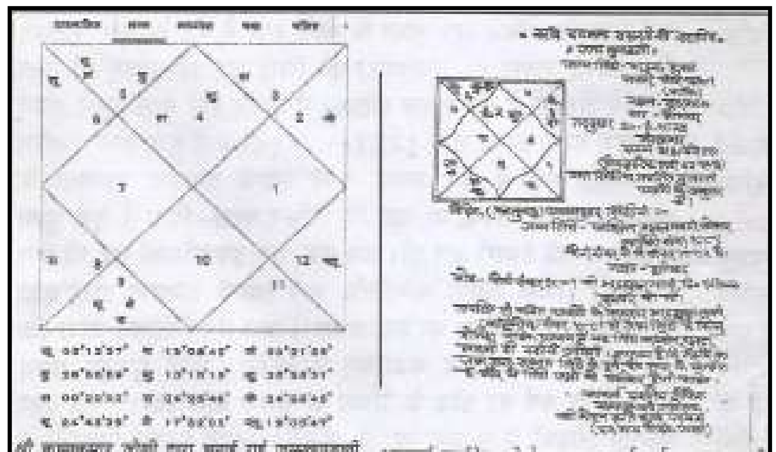

श्री कृष्णकुमार जोशी द्वारा बनाई गई जन्मकुण्डली   आचार्य दार्शनेय लोकेश द्वारा बनाई गई जन्मकुण्डली

4. अब जब हम स्वामी दयानन्द सरस्वती की इस संशोधित 20 सितम्बर, 1825 ई0 वाली जन्मतिथि को उनके पुणे में 4 अगस्त 1875 के पूर्वोक्त कथन पर कसते हैं, तब हम उसे सर्वथा सत्य पाते हैं, क्योंकि इसके अनुसार उनको 49 वर्ष की वय तो इस दिनांक से साढ़े दस मास पूर्व ही 20 सितम्बर, 1874 (भाद्रपद शुक्ल 9, रविवार) को पूरी हो चुकी थी, और 50 वर्ष की वय आगे डेढ़ मास बाद 20 सितम्बर, 1875 को पूरी होने जा रही थी।

5. इस जन्मतिथि की पुष्टि मेमं पं0 श्रीकृष्ण शर्मा ने अपने एक अन्य ग्रन्थ में यह भी लिखा है कि "मोरवी नगर के सेठ सुन्दर जी शिवजी के पुराने कागज में यह लिखा हुआ मिलता है कि संवत् 1881 वि0 भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी को उनकी तरफ से टंकारा महल के वहीवटदार (राजस्व-अधिकारी) के घर पुत्र के जन्म के उपलक्ष्य में छठी पर भेंटस्वरूप (सौगात-झबला) के रूप में) 116 रु0 का सामान भेजा गया था।"

आगे जब स्वामी दयानन्द सरस्वती की वय 21 वर्ष की भाद्रपद शुक्ल नवमी की तिथि पर गुजराती संवत् 1902 में पूरी हो गयी, तो आगे 51 दिनों के बाद वे कार्तिक पूर्णिमा से आरम्भ होने वाले कार्तिकी के मेले में जा पहुंच, जैसा कि उन्होंने स्वयं ही मार्ग में मिलने वाले एक स्वपरिचित बैरागी के पूछने पर बताया था कि "हाँ, मैंने घर छोड़ दिया है, और कार्तिकी के मेले पर सिद्धपुर को जाऊँगा।"

6. इस विषय में मैंने गत चैत्र प्रतिपदा संवत् 2075 वि0 पर 36 पृष्ठों की एक पुस्तक 'आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की वास्तविक जनमतिथि' शीर्षक से प्रकाशित करके कुछ आर्यपत्रों को समीक्षार्थ और कुछ विद्वानों को सूचनार्थ भेज दी थी। इनमें से समीक्षा तो केवल 'वेदवाणी' मासिक पत्रिका रेवली (सोनीपत) ने ही अपने मई 2018 के अंक के पृष्ठ 34 पर प्रकाशित की है। परन्तु कोटा के पं0 शिवनारायण उपाध्याय ने अजमेर के 'परोपकारी' पाक्षिक पत्र के सितम्बर (द्वितीय) एवं अक्टूबर (द्वितीय) के दो अंकों में क्रमश: पृष्ठ-26 और 30 पर तथा हिंडोनसिटी के मासिक पत्र 'वैदिक पथ' के अक्टूबर, 2018 के अंकों में अपनी गुजराती संवत् संबन्धी गलत अवधारणा के आधार पर विरुद्ध प्रचार से अपनी आलोचना प्रकाशित करायी थी, जिसका मैंने उन्हें समुचित उत्तर देकर उनसे अन्ततोगत्वा यह मनवा ही लिया है कि 'परोपकारी को लिखे पत्र में फाल्गुन कृष्ण पक्ष के स्थान में फाल्गुन शुक्ल पक्ष अनजाने में लिखा गया प्रतीत होता है, और मैं इस भ्रम में था कि गुजरात का पंचांग, जो कार्तिक मास में प्रकाशित हाता है, विक्रम संवत् से पहले नववर्ष में प्रवेश कर जाता है। परन्तु अब आचार्य लोकेश जी और आपके पत्र से विदित हुआ कि विक्रम संवत् पहले आरम्भ होता है और गुजराती संवत् बाद में प्रकाशित होता है। ऐसी स्थिति में तो वास्तव में गुजराती संवत् और विक्रम संवत् कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से चैत्र कृष्ण अमावस्या तक ही समान रहते हैं। शेष समय में विक्रम संवत् एक वर्ष आगे चलता है। इसलिए 20 सितम्बर, 1825 सन् के दिन भाद्रपद शुक्ल 9 संवत् 1881 गुजराती मानना ठीक है। इस समय विक्रम (विक्रम संवत् तो दोनों ही हैं अर्थात् चैत्र से आरम्भ होने वाला चैत्री और कार्तिक से आरम्भ होने वाला कार्तिकी संवत) संवत् 1882 चल रहा होगा। आपकी इस बात से मैं सहमत हूं। शेष मान्यता में सार्वदेशिक सभा की ही स्वीकार करता हूं।" पं0 शिवनारायण उपाध्याय की इस स्वीकारोक्ति के अंतिम वाक्य के भ्रम के निवारणार्थ ही मेरा यह लेख उद्दिष्ट है।

एच- १२८, राजहर्ष कॉलोनी,
अकबरपुर, कोलार रोड, भोपाल
(म०प्र०)-४६२०४२
चलभाष : ९४२५६०५८२३

स्वाधीनता संग्राम के महानायक- वीर सावरकर

डॉ. राम बहादुर 'व्यथित'

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर देशभक्तों में राजकुमार, विद्वानों में महारथी, राजनीति में बर्क, क्रान्तिकारियों में शिरोमणि, सुधारकों में अग्रगण्य और हंसमुख योद्धा थे, जिन्होंने कभी असफलता देखी नहीं, आत्मसमर्पण का स्वप्न नहीं लिया और सन्धि का विचार भी नहीं किया। सावरकर जी तीन भाई थे- एक बड़े और एक हमारे वीर से छोटे। तीनों ने केवल एक ही पाठ पढ़ा था और वह था देश के लिए बलिदान। देशभक्ति के अपराध में हमारे चरित्र-नायक वीर सावरकर और उनके बड़े भाई को कालेपानी (आजन्म कारावास) का दण्ड भुगतना पड़ा।

स्वातन्त्र्य समर के महानायक:- वीर सावरकर पहले भारतीय देशभक्त थे जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध सन् 1957 के सशस्त्र विद्रोह को - 'भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' घोषित किया। आप पहले भारतीय छात्र थे, जो केवल इस उद्देश्य से इंग्लैण्ड गये कि वहां जाकर भारतीयों को संगठित किया जाए और भारत की आजादी की मांग विश्व के सम्मुख रखी जाए। वहां आपने 'अभिनव भारत' नामक गुप्त क्रान्तिकारी संस्था सर्वप्रथम स्थापित की। वीर सावरकर पहले और संभवत: इतिहास में अपने ढंग के अनोखे ऐसे व्यक्ति थे जो अंग्रेज सरकार द्वारा ब्रिटेन से कैदी के रूप में एक समुद्री जहाज द्वारा भारत में मुकदमा चलाने के लिए जब लाये जा रहे थे, तब वे चलते जहाज में से कूद पड़े और तैरते हुए फ्रांस की भूमि पर पहुंच गये। ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें 'चोर' कह फ्रांसीसी सरकार से वापस लिया और धोखा देकर उन्हें पकड़ कर भारत लाये।

अंडमान जेल में वीर सावरकर को कोल्हू में बैल की जगह जोतकर तेल पेरना पड़ता था। आप पर बहुत कड़ी दृष्टि रखी जाती थी। हाथ-पैरों में बेड़ियां लगे होने के कारण आपको मूत्र और शौच विसर्जन के लिए बड़ा कष्ट उठाना पड़ता था। स्वतंत्रता के पश्चात् हमारी अपनी सरकार ने इस महान देशभक्त का सम्मान करने के बदले इन्हें गांधी हत्याकांड के लिए प्रेरणा देने वाला बताकर कई माह तक परेशान किया।

विलक्षण स्वातन्त्र्य प्रेम :- आप सर्वप्रथम राजनीतिक नेता थे, जिन्होंने सन् 1906 में पूना में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करके उनकी होली जलाई और उन दिनों में भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता को अपना ध्येय घोषित किया, जब स्वराज्य शब्द का उच्चारण मात्र ही विनाश को निमन्त्रण देना था। आप प्रथम बैरिस्टर थे, जिन्हें राजनैतिक कारणों से इंग्लैण्ड में उपाधि से वंचित किया गया। आप विश्व के राजनीतिक इतिहास में पहले राजनीतिक बन्दी थे, जिन्हें एक साथ दो आजीवन कारावासों का दण्ड मिला, किन्तु जो मृत्युंजयी बनकर रिहा हुए और तदुपरान्त हिन्दुओं को बलशाली बनाने हेतु जीवन के अन्तिम क्षण तक संघर्ष करते रहे।

अपने ढंग से अनोखे कवि :- आप विश्व में ऐसे प्रथम कवि थे कि जिन्होंने अपनी लेखनी और कागज से वंचित होने पर भी कारागार की प्राचीरों पर कीलों और कांटों से अपनी कवितायें लिखीं और फिर अपने काव्य के दस हजार पदों को कण्ठस्थ कर और दूसरों को भी कण्ठस्थ कराकर उन्हें अपने देश तक पहुंचाया। आप ही एकमात्र भारतीय नेता थे कि जिन्होंने यह उद्घोष किया कि हिन्दू स्वत: एक राष्ट्र है और उन्हें सूर्य-रश्मियों के तले अपना स्थान बनाना चाहिए। धर्मान्तरता का अर्थ राष्ट्राक्षरता है, यह भी आपका ही उद्घोष था। आप ही एकमात्र नेता थे कि जिन्होंने राजनीति के हिन्दूकरण और हिन्दुओं के सैनिकीकरण का महामंत्र प्रदान किया।

हिन्दू राष्ट्र के प्रथम उद्घोषक :- आपके महान ग्रन्थ 'सन् 1857 का प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम' को मुद्रण व प्रकाशन से पूर्व ही दो सरकारों ने जब्त घोषित कर दिया था। आप ही प्रथम तेजस्वी एवं स्वाभिमानी नेता थे जिन्होंने संसार के सम्मुख 'हिन्दू राष्ट्र' का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया। वीर सावरकर एक दूरदर्शी तत्वान्वेषी राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने सन् 1940 में हिन्दू महासभा के मदुरा-अधिवेशन में अपने अध्यक्षीय भाषण में सैनिकीकरण का नारा दिया था और अन्तत: सन् 1962 में सरकार को अपनी नीतियों में परिवर्तन करना पड़ा। उन्होंने अपने भाषण में आगामी दो वर्षों का कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए कहा था कि समस्त यूनिवर्सिटियों, कॉलेजों और स्कूलों में सैनिक शिक्षा अनिवार्य करने के लिए जोर डालो और अपने युवकों की नौसेना, वायुसेना तथा स्थल सेना में प्रविष्ट कर दो। अन्तत: सरकार ने भी शिक्षा- संस्थाओं में छात्रों को सैनिक शिक्षा देना प्रारम्भ कर दिया था।

१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के रचयिता :- 1907 ई. में वीर सावरकर ने इण्डिया हाउस की ओर से भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती मनाने की घोषणा की। उन्होंने 1857 ई. के गदर को भारत का प्रथम स्वातंत्र्य युद्ध मानकर ही यह घोषणा की थी। इसी अवसर पर उन्होंने 1857 ई. के गदर पर एक महत्वपूर्ण पुस्तक भी लिखकर प्रकाशित की। उस पुस्तक का नाम था- 1857 का स्वतंत्रता-संग्राम। सावरकर ने इस पुस्तक की रचना मराठी भाषा में की थी। उसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। सर्वप्रथम वह पुस्तक आयरलैण्ड से प्रकाशित हुई। जब यह छपकर सामने आयी तो अंग्रेजी सरकार ने यह समझकर कि मेजिनी के जीवन-चरित्र की तरह यह भी

आग लगाने वाली ही होगी, उसे जब्त कर लिया। भारत में उसके प्रवेश पर रोक लगा दी गई। पर सरकार के रोक लगाने पर भी उसकी कई हजार प्रतियां भारत पहुंच गईं और हाथों-हाथ चारों ओर फैल गईं।

कालापानी की सजा :- सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने का अभियोग लगाकर धारा 121 ए के अधीन वीर सावरकर पर मुकदमा चलाया गया। आपको बम्बई से नासिक हथकड़ी लगाकर लाया गया था। जब सावरकर जी जेल से कोर्ट तक आते तो मार्ग में जनता हृदय से उनका अभिनन्दन करती। आपका मुकदमा डेढ़ मास तक चला और 23 दिसम्बर सन् 1910 के दिन जजों ने अपना निर्णय सुना दिया। सावरकर जी पर तीन भयंकर अपराध लगाये गये। जजों ने अपने निर्णय में यह भी कहा कि सावरकर को फांसी का दण्ड मिलना चाहिए था, किन्तु हम केवल कालेपानी का ही दण्ड देते हैं। दो आजीवन कालापानी और नजरबन्दी आदि सब मिलाकर सावरकर जी को 55 वर्ष का कठोर दण्ड दिया गया। जिस दिन जजों द्वारा निर्णय सुनाया जाने को था, उस दिन तो कोर्ट के चारों ओर सुनने वालों का अपार जन समुदाय समुद्र की भांति उमड़ आया था। अदालत का निर्णय सुनने के बाद सावरकर जी ने कहा- 'तप और बलिदान से ही हमारी प्रिय मातृभूमि निश्चय ही विजय पायेगी, यह मेरा पूर्ण विश्वास है। इसलिए मैं तुम्हारे कानून का यह कठोर दण्ड भोगने के लिए तैयार हूं।'

कालेपानी के दण्ड के साथ-साथ सावरकर जी की सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गई। सन् 1911 में सावरकर जी अण्डमान पहुंचे। वहां की जेलों की बहुत बुरी हालत थी। कमरे अंधेरे तथा कच्चे थे। बरसात होने पर छत से पानी टपकता था। अण्डमान की जलवायु भी बहुत बुरी थी। सावरकर जी के बड़े भाई गणेश दामोदर सावरकर को पहले ही कालापानी मिल चुका था, अब वीर सावरकर भी वहां पहुंच गये। कई बंगाली नवयुवक तो पहले से वहां सड़ रहे थे। सावरकर-बन्धुओं को सबसे अलग रखा जाता था और इन्हें परस्पर भी न मिलने दिया जाता था। सावरकर जी गीत बनाया करते और उन्हें दीवारों पर लिख दिया करते थे। आंदोलन का उन्होंने इस समय केवल यही उपाय सोच रखा था। किन्तु अधिकारी दीवारों पर लिखे हुए को भी मिटाने लगे। अण्डमान में सावरकर जी को कुछ क्षय रोग की-सी शिकायत हो गई थी और आप इतने निर्बल हो गये कि आपके जीवन की भी कम आशा रह गई थी। अण्डमान में आपका वजन 119 पौंड से घटकर केवल 98 पौंड रह गया। सन् 1924 में दोनों भाइयों ने फिर अपनी मातृभूमि के दर्शन किए और कलकत्ता बन्दरगाह पर उतरे। वहां फिर सावरकर जी को अपने बड़े भाई से अलग कर दिया गया और इन्हें रत्नागिरि जिले की जेल में भेज दिया गया।

साहित्य-सृजन :- सावरकर जी को पहले तो कलकत्ता की अलीपुर जेल में बन्द रखा गया और तदनन्तर इन्हें सन् 1927 में रत्नागिरि जिले की जेल में भेज दिया गया। सन् 1927 तक आप वहीं नजरबन्द रहे। आपकी लिखी हुई पुस्तकों में मुख्य ये समझी जाती हैं-

मराठी :- 1. जोसेफ मेझिनी यांचे आत्म-चरित्र व राजकरण (जब्त), 2. शिखांचा इतिहास (अप्रकाशित: नष्ट), 3. माझी जन्मठेप (जब्त), 4. कालेपानी (कादंबरी), 5. सं. उ:शाप (नाटक), 6. सं. संन्यस्त खड्ग (नाटक), 7. सं. उत्तरक्रिया (नाटक), 8 मला काय त्यांचे (कथा), 9. नेपाली आंदोलनांचा उपक्रम, 10. सावरकर-साहित्य, भाग-1-5।

अंग्रेजी :- 1. इण्डियन वार ऑफ इण्डिपेण्डेन्स (जब्त), 2. हिन्दू पाद पादशाही।

कविता :- 1. राव फुलें, 2. गोमांतक। सावरकर जी के साहित्य का हिन्दी, अंग्रेजी और मराठी आदि अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। आपकी बनाई हुई कविताएं आज महाराष्ट्र भर की जिह्वा पर विराजमान हैं। श्री जमनादास मेहता के उद्योग से वीर सावरकर 10 मई 1937 को सब बंधनों से मुक्त कर दिये गये और फिर आप अपनी इच्छानुसार कार्य करने लगे।

महात्मा गांधी की हत्या :- नाथूराम गोडसे हिन्दू महासभा की विचारधारा से प्रभावित था और साथ ही महाराष्ट्रीय होने और हिन्दू महासभा के नेता होने के कारण महात्मा गांधी जी की हत्या के षड्यन्त्र में सहयोग देने का आप पर सन्देह किया। कांग्रेसियों और कम्युनिष्टों की अनियंत्रित भीड़ ने 31 जनवरी 1948 को बम्बई के सावरकर सदन पर आक्रमण किया। बम्बई के हिन्दू महासभा-कार्यालय को नष्ट कर डाला गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यालय पर भी आक्रमण किया गया। 5 फरवरी को प्रात: उच्च पुलिस अधिकारी सावरकर-सदन पहुंचे और उनसे कहा कि आपकी गिरफ्तारी के वारन्ट हैं। 20 नवम्बर को सावरकर जी ने अपना 52 पृष्ठों का ऐतिहासिक बयान दिया, जिसमें कहा कि उन्हें जान बूझकर झूठे मामले में फंसाया गया है। विद्वान न्यायाधिपति श्री आत्माचरण ने 10 फरवरी 1949 को मुकदमें का निर्णय सुनाते हुए देशभक्त सावरकर जी को निरपराध सिद्ध करते हुए ससम्मान मुक्त कर दिया। यह महान नेता परीक्षा घड़ी में सर्वथा शुद्ध होकर सोने से सुन्दर बन गया।

अन्तिम विदा :- वर्षों से रोग शय्या पर पड़े और मृत्यु से जूझते हुए देश के महान नेता स्वातन्त्र्य वीर सावरकर 26 फरवरी सन् 1966 को 83 वर्ष की आयु में इस संसार से कूच कर गये। अपने जीवन के अन्तिम क्षण में भी राष्ट्र का ही ध्यान रखने वाले राष्ट्रभक्ति के इस धधकते ज्वालामुखी को इस युग का सबसे बड़ा क्रांतिद्रष्टा कहा जाए तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं होगी। वीर सावरकर का रोम-रोम राष्ट्र के लिए समर्पित था। भारत के उन हुतात्माओं में उनकी गणना की जायेगी, जिन्होंने अपने कार्यों द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के उस काल में देश के युवकों को मातृभूमि की वेदी पर सर्वस्व निछावर करने की प्रेरणा दी, जब देश को इसकी अत्यधिक आवश्यकता थी। हम श्रद्धालु, निष्ठावान, भारतीय भारत के उस महान क्रान्तिधर्मी ज्वालामुखी को प्रणाम करते हैं तथा भारत की स्वतन्त्रता के सदैव अक्षुण्ण रहने की मंगल कामना करते हैं।

सेवानिवृत्त- उप प्रधानाचार्य
हा.सि.इस्लामिया इण्टर कॉलेज,
बदायूँ (उ.प्र.)

गुधनी में यज्ञ महोत्सव की ३० से होगी धूम

३० मई को भव्य शोभायात्रा
२ जून को होगी पूर्णाहूति
३ जून को होगा भंडारा
२५१ वृक्षों का होगा रोपण

आचार्य संजीव रूप
गुधनी, बिल्सी (बदायूं) उ.प्र.

बिल्सी क्षेत्र के ग्राम गुधनी खौसारा में गतवर्षों की भांति इस वर्ष 30 मई से 3 जून तक भव्य यज्ञ महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

आर्य समाज मंदिर में यज्ञोपरांत विशेष सभा में बोलते हुए सुप्रसिद्ध समाज सुधारक आचार्य संजीव रूप ने कहा कि इस वर्ष यज्ञ महोत्सव पर्यावरण के लिए शुभ संस्कारों, समाज सुधार, राष्ट्ररक्षा तथा विश्वशान्ति के लिए समर्पित रहेगा। आचार्य जी ने बताया कि क्षेत्र की बालक–बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु दस दिवसीय संस्कार शिविर भी लगाया जाएगा, जो 25 मई से शुरु होगा। 30 मई को भव्य शोभायात्रा होगी, जिसमें 251 वृक्ष भी लगवाये जायेंगे।

उन्होंने बताया कि विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ 71 कुण्डीय यज्ञ की पूर्णाहुति 2 जून को होगी तथा इसी दिन रात्रि में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन आयोजन किया जाएगा और 3 जून को विशाल भण्डारा सम्पन्न होगा।

उल्लेखनीय है कि 250 किलोग्राम गोघृत व 3 कुन्टल सामग्री से लगभग 250 यजमान होम करेंगे। इस महोत्सव में कानपुर से स्वामी धर्मदेव, सल्तानपुर से आचार्य शिवदत्त पाण्डेय, देवरिया से नैनश्री प्रज्ञा, दिल्ली से डॉ0 अनिल आर्य तथा अमरोहा से डॉ0 अशोक आर्य सहित अनेक विद्वान, राजनेता तथा गणमान्य जन पधारेंगे। इस अवसर पर बालक–बालिकाओं को डॉ0 प्रशांत आर्य विशेष प्रशिक्षण देंगे। समारोह में लगभग 20 हजार लोगों की उपस्थिति रहेगी।

इस संबन्ध में आयोजित बैठक में मंत्री अग्रपाल सिंह, प्रधान ओमप्रकाश सिंह, मास्टर साहब सिंह, राकेश आर्य, डॉ0 बद्री प्रसाद आर्य, किशनपाल, आशोकपाल सिंह व संजय सिंह आदि मौजूद रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा

भव्य योग-साधना शिविर

दिनांक : १६ से २३ जून, २०१९

(ज्येष्ठ शुक्ल ४ से ज्येष्ठ शुक्ल ११, सम्वत् २०७५ तक)

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की संतुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जाएगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जाएगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएं

मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज0) 01452460164 से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवाकर अपने नाम का पंजीकरण करवा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क 1000 से 2000 रु0 देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएं यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएं, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लीखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएं। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो, तो साथ लाएं।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क 2000 रु0 मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारम्भ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (01452621270) में पहुंच जाना आवश्यक है, क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्वपूर्ण सूचनाएं दी जाएंगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटोरिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टैण्ड से (वाया- आगरा गेट/ फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

दूरभाष : 0145-2460164
ईमेल : psabhaa@gmail.com

–मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर

आवश्यकता है प्रतिनिधियों की

आपके प्रिय पत्र आर्यावर्त केसरी को देशभर में ऐसे प्रतिनिधियों की आवश्यकता है जो आर्य जगत, गुरुकुलों, आर्ष संस्थाओं व आर्य समाजों की गतिविधियों के समाचार व विचार प्रकाशनार्थ नियमित रूप से भेज सकें। साथ ही, जन-जन तक आर्यावर्त केसरी का प्रचार-प्रसार करने में सहायक सिद्ध हों।

–सम्पादक (9412139333)

ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ और आर्य पर्वों पर केन्द्रित एक श्रेष्ठ पुस्तक

आर्य पर्व पद्धति

(केवल 20/- में उपलब्ध)

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

सम्पर्क- 9412139333

आज ही मंगाएं

अर्चना यज्ञ पद्धति

(केवल 12/- में उपलब्ध)

साथ ही अनेक अन्य महत्वपूर्ण संग्रहणीय पुस्तकें सूची मंगाएं

घर-घर तक पहुँचाएं कालजयी ग्रंथ

सत्यार्थ प्रकाश

मूल्य- ५०/-, १५०/-

प्रकाशक : आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

जीवनर रक्षा हेतु

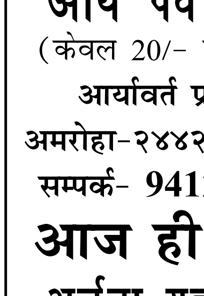

तैराकी अवश्य सीखिए

: प्रशिक्षक :

दिगराज सिंह आर्य

ग्रा0/पो0- सरकड़ी अजीज,
तह0/जिला-अमरोहा-244221
मोबा. : 9105573549

वधु चाहिए

एक प्रतिष्ठित व्यावसायी (मारूति सुजुकी एजेंसी) परिवार के अग्रवाल (गोयल) वैश्य एम.बी.ए. (एकाउण्टेंसी एण्ड बिजनैस), बी.टैक. नवयुवक 29 वर्ष, 5 फिट 7 इंच, निजी पब्लिक स्कूल हेतु सुन्दर, सुशील, सुशिक्षित एवं सुयोग्य वधु चाहिए। सम्पर्क सूत्र- बी.एल. गोयल, बरोग न्यू, हॉस्पिटल रोड, सोलन (हिमाचल प्रदेश)-173212, मोबा. : 9418525876

वर चाहिए

एक भाटी राजपूत 23 वर्षीय कन्या हेतु, जिसकी सम्पूर्ण शिक्षा कन्या गुरुकुल में सम्पन्न। सिलाई, कटाई तथा कम्प्यूटर में आई.टी.आई. प्रमाण पत्र प्राप्त तथा शास्त्री (हिन्दी संस्कृत) अंतिम वर्ष की परीक्षा दी है, रिजल्ट प्रतीक्षित है, एक सेवारत अथवा स्वरोजगारी सजातीय वर की आवश्यकता है। सम्पर्क सूत्र : 8859946499

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्मतिथि- 12.01.1992, कद- 5 फुट 5 इंच, शिक्षा-B.Tech. (Com. Sc.) NIT, Raipur से, Multinational Company में अच्छी पोस्ट पर कार्यरत् प्रतिष्ठित परिवार के युवक हेतु आर्य परिवार की सुशिक्षित एवं संस्कारवान युवती चाहिए। सम्पर्क- 9412865775, 9412135060

वर चाहिए

वैदिक विचारों की 26 वर्षीय संस्कारित ब्राह्मण कन्या। प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल चोटीपुरा से। शिक्षा- बी0टैक0। हिन्दुस्तान एरोनैटिक्स, बंगलूरू में प्रबन्धक युवती हेतु आर्य समाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए। सम्पर्क सूत्र : 8368508395, 9456274350

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु- 40 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, शिक्षा- स्नातक, व्यवसायी युवक हेतु आर्य परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 09457274984

वधु चाहिए

आर्य परिवार संस्कारित, यमुनानगर (हरियाणा) निवासी, जन्म 19 जुलाई 1982, कद 6 फुट, शिक्षा बी0ए0, अपना मकान व दुकान, व्यापार में संलग्न युवक हेतु आर्य समाज परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क सूत्र : 07404136582, 08607200203

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

देश के बहुचर्चित ऐतिहासिक आर्यसमाज

आर्यसमाज विधानसरणी, कलकत्ता

सन् 1885 में स्थापित यह आर्य समाज एक ऐतिहासिक आर्यसमाज है। आर्य समाज कलकत्ता के संस्थापक प्रधान राजा तेजनारायण जी थे। श्री तेजनारायण जी भागलपुर के रईस थे, अच्छे सम्पन्न थे और सम्पन्नता के साथ ही बड़े उदार हृदय के व्यक्ति थे। संस्थापक उपप्रधान जस्टिस पंडित शम्भूनाथ जी पंण्डित के सुपुत्र पण्डित शंकरनाथ जी थे। पण्डित शंकरनाथ जी सम्पन्न तो थे ही, उच्च कोटि के विद्वान और लेखक भी थे। राणा तेजनारायण और पंण्डित शंकरनाथ का साथ–साथ प्रधान–उपप्रधान निर्वाचित होना मणिकांचन जैसा सुयोग था। आर्य समाज कलकत्ता के संस्थापके प्रधानमंत्री बाबू महावीर प्रसाद जी निर्वाचित हुए। बाबू महावीर प्रसाद जी राजा तेजनारायण जी के व्यवसाय और जमीदारी का दायित्व कोलकाता में सम्भालते थे।

प्रगति के चरण :– आर्य समाज कलकत्ता अपने स्थापना काल से ही प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहा। प्रारम्भ में ही आज से 130 वर्ष पूर्व आर्यावर्त्त प्रेस स्थापित किया गया। इसके लिए राजा तेजनारायण जी ने 20 हजार रुपये और पण्डित शंकरनाथ जी ने अपने निवास स्थान में दो कमरे दिए थे। उस आरम्भिक काल में भी आर्य समाज कलकत्ता ने आर्यावर्त्त नाम का एक पत्र प्रकाशित कराना आरम्भ किया। पण्डित रूद्रदत्त शर्मा सम्पादकाचार्य इस पत्र के प्रथम सम्पादक नियुक्त हुए। राजा तेजनारायण जी ने 10 हजार रुपये की सहायता देकर श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय को स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की जीवनी लिखने के लिए सामग्री संचय के निमित्त प्रदान किया। आज 131 वर्षो बाद ये 10, 20 हजार रुपये आज कितने लाख हुए यह किसी के भी अनमान का विशय हो सकता है। आरम्भ से ही आर्य समाज कलकत्ता के अधिकारी और कार्यकर्त्ता आर्य समाज कलकत्ता को प्रगति के पथ पर अग्रसर किये जा रहे हैं।

आर्य समाज कलकत्ता कई प्रकार के जनहित के कार्य कर रहा है। जिनमें महर्शि दयानन्द दातव्य औशधालय, होमियोपैथिक चिकित्सा विभाग, नेत्र चिकित्सा विभाग, प्याऊ की व्यवस्था, दैनिक यज्ञ, सप्ताह यज्ञ व सत्संग, स्त्री आर्यसमाज, बाल सत्संग, पुस्तकालय एवं बाचनालय, दैनिक योग शिविर, बंगला साहित्य प्रचार, आर्य समाज मासिक पत्रिका का प्रकाशन, आर्य गौरव (बंगला मासिक), आर्य कन्या महाविद्यालय, आर्य कन्या प्राथमिक विभाग, महर्शि दयानन्द एकेडमी, आर्य महिला शिक्षा मंडल ट्रस्ट, रघुमल आर्य विद्यालय, आर्य विद्यालय ट्रस्ट, आर्य साहित्य प्रकाशन, पुस्तक मेलों सहित विभिन्न स्थलों पर वेद प्रचार, शुद्धि, तिलक व विवाह संस्कार आदि उल्लेखनीय है।

–आर्य समाज–19 विधान सारणी, कोलकत्ता–700006, दूरभाष–022413439

देश के बहुचर्चित ऐतिहासिक आर्यसमाज

जीवंत है जिनकी गौरव गाथा

इस स्तंभ के अन्तर्गत ऐतिहासिक महत्व के ऐसे आर्यसमाज जो अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं या करने जा रहे हैं या जो अपने क्रियाकलापों की दृष्टि से उल्लेखनीय भूमिका निभा रहे हैं के विषय में परिपयात्मक सामग्री यथा कब स्थापित हुई, किसने की, क्या क्या गतिविधियाँ संचालित होती हैं आदि सहित अन्य महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जाने की योजना है ताकि जन–जन को ऐसे आर्यसमाजों के गौरवशाली इतिहास का परिचय मिल सके। ऐतिहासिक आर्य समाजों के विशय में बहुमूल्य सामग्री प्रकाशनार्थ भेजने की विज्ञजनों से सानुरोध प्रार्थना है। –सम्पादक

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित हैं। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्य सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में योगदान दें।

सम्पर्क करें : आचार्या प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401

फोन : 01495–270503 मोबा. : 09416747308

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, सासनी

जनपद हाथरस (उ०प्र०)

प्रवेश प्रारम्भ सत्र–2019–20

नोट : कन्या गुरुकुल में प्रवेश परीक्षा के आधार पर लिया जायेगा

1- कक्षा शिशु (नर्सरी) से नवम तक किसी भी कक्षा मे लिया जा सकता है।
2- कक्षा 11वीं तथा 13वीं (उत्तर मध्यमा, विद्याविनोद, शास्त्री, विद्यालंकार) कक्षा में भी प्रवेश लिया जा सकता है।
3- प्रवेश के समय छात्रा के पासपोर्ट साइज तीन रंगीन फोटो तथा छात्रा से मिलने वाले किन्हीं चार व्यक्तियों के पासपोर्ट साइज रंगीन फोटो, अंकतालिका, काउण्टर साइन टी0सी0, पहचान पत्र, आधार कार्ड साथ लेकर आयें।
4- मान्यता- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार; सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
5- नवीं से बारहवीं तक गुरुकुल कांगड़ी के पाठ्यक्रम में (एन0सी0ई0आर0टी0) का पाठ्यक्रम संचालित है।
6- नवीं से बारहवीं कक्षा तक कला वर्ग के साथ-साथ विज्ञान वर्ग का भी पाठ्यक्रम संचालित है।
7- **अतिरिक्त प्रशिक्षण**
1- संगीत (गायन, वादन, तबला) में प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की परीक्षाएं (जूनियर डिप्लोमा से लेकर संगीत प्रभाकर तक) संचालित हैं। 2- खेलकूद तथा शारीरिक प्रशिक्षण (जूडो-कराटे, बैडमिंटन, खो-खो)। 3- योग-प्रशिक्षण

कन्या गुरुकल अलीगढ़-आगरा मार्ग पर सासनी हाथरस के मध्य स्थित है।

सम्पर्क सूत्र- मोबा. : 9458480781, 9258040119, 8006340583, 9927991622, 7830289379

ईमेल : kanyagurukulmhv.hathras@gmail.com, kgpiti2007@gmail.com, वेबसाइट : kanyagurukul.in

–डॉ0 पवित्रा विद्यालंकार, मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या

विश्वभर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक समाचार-पत्र

आर्यावर्त केसरी

पाठक संख्या
100000
एक लाख

विज्ञापन एवं आलेख प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें-
डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
मोबा : 8630822099, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं

आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित
तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका

आर्य समाज की विचारधारा

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।
न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।
हमारा पता है- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.), मो० : 09412139333

गृहस्थ में रहते हुए ही त्रि–एषणाओं से छूटने का अभ्यास करें

अवश्यमेव सफल हो जायेगा मानव जीवन

आचार्य रामसुफल शास्त्री (हाँसी)

परमपिता परमेश्वर द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान के माध्यम से संसार की समस्त योनियों में सर्वश्रेश्ठतमम् योनि पुरुष जाति के लिए जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त वैदिक नियमानुसार चलकर मुक्ति अर्थात् जन्म मरण के चक्र से छूटकर प्रत्येक मनुष्य को अपना–अपना जीवन सफल करने का दुर्लभ सुअवसर प्राप्त हुआ है। प्रत्येक मनुष्य को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि मानव जीवन अर्थात् मनुष्य का जन्म विशेश पुण्य कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है। इसे एक क्षण भी व्यर्थ न गंवायें।

विद्यार्थी जीवन, गृहस्थ जीवन, वानप्रस्थ जीवन और संन्यास ये चार विभाग विद्या प्राप्ति से लेकर मोक्ष तक पहुंचने के लिए अति उत्तम मार्ग हैं अथवा व्यक्ति का विशेष पुण्य प्रताप प्रबल हो तो सीधे संन्यास धारण कर मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर हो सकता है। कोई भी मनुष्य ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ के द्वारा सीढ़ी दर सीढ़ी संन्यासी बनकर मोक्ष की प्राप्ति करना चाहे तो विद्यार्थी जीवन में खूब परिश्रम से विद्या प्राप्त करे और फिर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करके धर्मपूर्वक अत्यन्त श्रम करते हुए धन अर्जित करके परिवार का सुख पूर्वक पालन पोषण करें।

गृहस्थ सभी आश्रमों में से सबसे अधिक जिम्मेदारियों का आश्रम है। गृहस्थी बनने के बाद ही व्यक्ति पत्नी–पुत्र आदि सम्बन्धियों एवं धन सम्पदा आदि के माया मोह रूपी जाल में अधिक फंसता जाता है, इसलिए पारिवारिक जिम्मेदारियों घर–गृहस्थी के कर्तव्य–कर्मो को निभाते हुए प्रत्येक गृहस्थी को तीन एषणाओं से छूटने का अभ्यास व प्रयास गृहस्थ में रहते हुए ही निरन्तर करते रहना चाहिए।

पुत्रैषणा–वित्तैषणा एवं लोकैशणा को भली भांति समझकर पत्नी–पुत्र–पुत्री आदि के प्रति अपना पूर्ण कर्तव्य निभाते हुए सम्बन्धियों से कोई इच्छा–उम्मीद न रखें, अपना कर्तव्य अदा करके भूल जाये, पुत्रों का क्या कर्तव्य है, वे स्वयं जाने। पुत्र–पुत्रियों की क्या जिम्मेदारी है? उन्हें स्वयं ही समझना चाहिए। पुत्रैषणा में अधिक न फंसे, अधिक माया–मोह दुःखदायी है।

वित्तैषणा :– धर्मपूर्वक अपने परिश्रम से कमाये हुए धन से उदरपूर्ति, परिवार का पालन–पोशण, समाज सेवा के कार्य आदि के लिए उत्तम ढंग से कमाये हुए धन को उत्तम तरीके से खर्च करना चाहिए, लोभ लालच के वशीभूत अधर्म व पाप से धनार्जन बिल्कुल भी न करें। अपने परिवार का हिसाब पूर्णतया ठीक रखें।

किसी कवि ने बहुत ही सुन्दर लिखा है कि :–

''धन खूब कमा सुख चैन मना, पर ऐसा कोई अपराध न कर।/अपना घर–बार बसाने को, औरों का घर बरबाद न कर।।''

धन की पवित्रता का पूरा–पूरा ध्यान रखें और धीरे–धीरे धन की इच्छा को कम करते हुए वित्तैषणा से छूटने का कठिनतम् अभ्यास नित्यप्रति करें।

लोकैषणा :– अत्याधिक मान–सम्मान की इच्छा रखना लोकैषणा कहलाती है। इसीलिए लोगों के बीच समाज में बहुत मान–सम्मान की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। यदि कोई श्रद्धापूर्वक आदर सम्मान दे तो उसे विनम्रतापूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिए, किन्तु अपने मन में सम्मान की इच्छा कदापि न रखें। अधिक सम्मान मिलने पर उतावले न हो और अपमानजनक स्थिति में विचलित न हो, यही लोकैषणा से बचने का सरल उपाय है।

इस प्रकार के प्रत्येक गृहस्थी, अपने घर–गृहस्थ के कार्यो को करते हुए, अपनी जिम्मेदारी को निभाते हुए तीनों एषणाओं से धीरे–धीरे छूटने का अभ्यास करें, ताकि गृहस्थ में रहते हुए वानप्रस्थ की तैयारी हो जाये और वानप्रस्थ लेकर तप–स्वाध्याय करत हुए संन्यास की ओर अग्रसर हो। जब अपने पुत्र व दूसरे के पुत्र में एकीभाव नजर आने लगे अर्थात् अपने–पराये का भेद समाप्त हे जाये तब संन्यास धारण करें। तभी अवश्यमेव मानव जीनव सफल हो जायेगा।

(वैदिक प्रवक्ता)
पुरोहितः–आर्य समाज सैक्टर–7 बी चण्डीगढ़
मो0–9416034759, 9466472375

टंकारा को सजाया जायेगा

आचार्य रामसुफल शास्त्री (वैदिक प्रवक्ता)

गुरुधाम से बुलावा आया है, जन्म भूमि ने हमें बुलाया है।
बोध उत्सव का संदेशा आया है, उस माटी ने हमें बुलाया है।।
आर्यो का वही मूल है जहॉ, मूल शंकर का जन्म हुआ।
वेद मार्ग पर चलने का, रास्ता वहीं से प्रकट हुआ।।
चलो वैदिक सुपथ पर चलने का, फिर से बुलावा आया है।
गुरूधाम से.. ।।1।।
मूल–शुद्ध चैतन्य–दयानन्द, नाम ही ऐसे निराले हैं।
देश धर्म की खातिर जिसने, पिये जहर के प्याले हैं।।
शतबार नमन् करने के लिए, शिवरात्रि में हमें बुलाया है।
गुरूधाम से.. ।।2।।
3 से 5 मार्च 2019 में, बोध उत्सव मनाया गया।
आप चलो हम भी पहुंचे, टंकारा को खूब सजाया गया।।
''टंकारा'' वाले का हम को, स्नेह निमंत्रण आया है।
गुरूधाम से.. ।।3।।
सच पूछो तो सब आर्यो की, टंकारा एक राजधानी है।
आर्य समाज की ऑंख का तारा, ऋषि की मधुर निशानी है।।
''रामसुफल'' ने गीत को रचकर, सबको संदेश पहुॅंचाया है।
गुरूधाम से.. ।।4।।

पुरोहितः–आर्य समाज सैक्टर–7बी चण्डीगढ़
मो0–9416034759, 9466472375

ऋषिवर ने सब कुछ छोड़ दिया

वन्दना शास्त्री बी0एड0

(तर्ज– चांदी की दीवार न तोड़ी प्यार भरा ....)
शिवरात्रि की घटना से ऋषिवर ने सब कुछ छोड़ दिया।
सच्चे शिव की खोज की खातिर, सारा कुनवा छोड़ दिया।।
देख के चूहे शिव के ऊपर , मूल के मन संशय जागा।
मन का संशय दूर करन हित, मूल रात भर था जागा।।
मूल के मन से उसी समय से, सदा की खातिर भ्रम भागा।
तब से जड़ मूर्ति का पूजन, झूठा नाता तोड़ दिया।
सच्चे शिव की खोज की खातिर, सारा कुनवा छोड़ दिया।।
आकर पुत्र माता से बोला, माँ ये नकली शंकर है।
जिसे समझता था मैं शिव जी, वह पूरा जड़ पत्थर है।
सच्चे शिव की आड़ में ये तो, और ही कोई चक्कर है।
मैं तो शिव की खोज करूंगा, ऐसा कह मुंह मोड़ लिया।।
सच्चे शिव की खोज की खातिर, सारा कुनवा छोड़ दिया।।
निकल पड़े घर बार छोड़कर, दर–दर खाक छान डाली।
तीन वर्श में वेद शास्त्र पढ़, शिक्षा पूरी कर डाली।।
फिर सींचा ये वैदिक बगीचा, बन कर के सच्चा माली।
''वन्दना शास्त्री'' के जीवन को सच्चे शिव से जोड़ दिया।
सच्चे शिव की खोज की खातिर, सारा कुनवा छोड़ दिया।।

अध्यापिका– मानवती आर्या कन्या हाई स्कूल, हॉसी
जिला हिसार– हरियाणा पिन 125033
मो– 9466850651, 9896866577

स्वास्थ्य जगत

मेथी

हरिश्चन्द्र आर्य

आयुर्वेदिक मत :

कटु तिक्त रस, लघु रुक्ष गुण, उष्णवीर्य, और कटु विपाक है। यह वात कफ नाशक एवं ज्वरनाशक है। दीपन, कब्जकारक, बलकारक और हृदय को ताकत देती है। बवासीर, कृमिरोग का नाश करती है। सुश्रुत ऋषि बड़े पत्तों वाली मेथी की भाजी को रुक्ष एवं मल–मूत्र को रोकने वाली मानते हैं। कृमि, शूल, गुल्म संधिवात कमरदर्द सामान्य पीड़ा को दूर करती है। पौष्टिक हृद्य और बल्यकर है।

वैज्ञानिक मत :

इसमें तेल राल और अल्युमुनियम होता है। कोलाइन व टिगोनलाइन होता है। इसमें 25 प्रतिशत फास्फोरिक एसिड होता है। वात– नाड़ियों पर प्रभावक असर होता है। डॉ0 आर0एन0 शोरी ने लिखा है कि मेथी चिकनी, बलकारक व वायुनाशक है। यह संग्रहणी, अग्निमंदता और वातरोगों का नाश करती है। बच्चा होने के बाद स्त्रियों को दी जाती है। श्वेत प्रदर में इसके लूआब को कपड़ा भिगोकर योनि में रखते हैं।

उपयोग :

1. मेथी खाने के लिए शीत ज्यादा अनुकूल ऋतु है। वात व्याधि भी जाड़े के मौसम में अधिक उग्र होती है। अत: इस मौसम में मेथी पाक या मेथी के लड्डू खाना हितकारी है।

2. शीतकाल में मेथी का सेवन करने वालों को वायुरोग का असर नहीं होता।

3. मेथी पाक आमवात, वातरोग, विषम ज्वर, पीलिया, उन्माद, अपस्मार, प्रमेह, अम्लपित्त, मस्तिष्क संबन्धी रोग, स्त्रियों के प्रदर में लाभदायक है।

4. ठंड की ऋतु में मेथी के लड्डू हितकारी हैं।

5. मेथी और सौंठ का चूर्ण गुड़ मिलाकर खाने से आम वात मिटता है।

6. मेथी का आटा दही में मिलाकर खाने से पेचिस में लाभ होता है।

7. मेथी के कोमल पत्तों का साग कब्ज दूर करता है।

8. मेथी के दानों और पत्तों को पीसकर लेप करने से सूजन पर लाभ मिलता है।

9. मेथी का चूर्ण अनुपान भेद से कई रोगों का शमन करता है।

10. मेथी का सेवन प्रतिदिन करने से वात विकार मिटता है।

–अधिष्ठाता,
उपदेश विभाग, अमरोहा

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत में ऐसे करें सामान्य वार्तालाप
वदतु संस्कृतम्–1

नमस्कारः।	नमस्कार।
नमस्ते/नमो नमः।	नमस्तें।
हरिः ओम्।	हॅलो।
श्रीमन्/मान्ये।	सर/मैडम। (सम्बोधन में)
धन्यवादः।	धन्यवाद।
स्वागतम्।	स्वागत।
क्षमां करोतु।	क्षमा कीजिए।
चिन्ता नास्ति।	कोई बात नही।
कृपया	कृपया।
आम्/न।	हाँ/नहीं।
उत्तमम्/बहु उत्तमम्।	अच्छा/बहुत अच्छा।
हार्दिकाः शुभकामनाएः।	हार्दिक शुभकामनायें।
अभिनन्दनम्।	अभिनंदन।
पुनः मिलामः।	फिर मिलेंगें।

एक अविस्मरणीय यात्रा अनुभव

हमेशा याद रहेगा वानप्रस्थ आश्रम एवं गुरुकुल, आनन्दधाम गढ़ी, उधमपुर, जम्मू एवं कश्मीर में आयोजित

योग ध्यान साधना शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ

सतीश चन्द्र गर्ग

मैं, सतीश चन्द्र गर्ग (सेवानिवृत्त प्राचार्य, अग्रसेन पी0जी0 कालेज, सिकन्द्राबाद (उ0प्र0) एक सामाजिक कार्यकर्ता हूं। डॉ0 अशोक कुमार आर्य द्वारा सम्पादित पाक्षिक समाचार पत्र 'आर्यावर्त केसरी' का विगत चार वर्षों से नियमित पाठक हूं। इसके द्वारा जम्मू कश्मीर प्रान्त में उधमपुर जिले में स्थित 'महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थ एवं गुरुकुल गढ़ी, पोस्ट- हरतनयान में एक सप्ताह की समयावधि (16 से 23 सितम्बर 2018) के योग ध्यान साधना शिविर के आयोजित होने की जानकारी मिली। तत्पश्चात् सामान्य उत्सुकतावश संबन्धी सम्पर्क सूत्र से दूरभाष पर वार्ता की। आश्रम ट्रस्ट समिति के अध्यक्ष माननीय भारत भूषण आनन्द जी से बातचीत हुई और उनके अपनत्वपूर्ण आमंत्रण से हृदय में विश्वास उत्पन्न हुआ कि अपने निकटतम मित्रों के साथ योग साधना शिविर में साधक के रूप मे सहभागिता की जाए। ग्रेटर नोएडा के अपने घनिष्ठ मित्र अनिल कुमार तायल से बात की, तो उन्होंने सहर्ष शिविर में चलने की सहमति दी। इसके बाद स्थानीय इंटर कालेज के सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य श्री वीरेन्द्र स्वरूप सक्सैना जी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता सक्सैना ने भी इस शिविर के लिए अपनी उत्सुकता प्रदर्शित की। सक्सैना जी ने भी आश्रम प्रधान जी से वार्ता की, तथा हम चारों ने शिविर में सम्मिलित होने का दृढ़ निश्चय कर लिया। शिविर प्रारम्भ होने में लगभग 20-22 दिन शेष थे, अत: तुरंत दिल्ली से उधमपुर के लिए रेल टिकट बुक करा दिये। नियत दिन 15 सितम्बर 2018 को हम चारों सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशन पहुंचे एवं रात्रि 9 बजे उधमसिंह की यात्रा प्रारम्भ की। कठुआ प्रात: लगभग 5 बजे पहुंचे, तभी मोबाइल का संपर्क समाप्त हो गया। जम्मू से उधमपुर के रास्ते में ट्रेन कई सुरंगों से गुजरी, जो रोमांचक अनुभव था। 16 सितम्बर प्रात: 8-30 बजे उधमपुर रेलवे स्टेशन पर हम सभी पहुंच गये। वहां से टैक्सी द्वारा रास्ते में प्रकृति की सुन्दरता को निहारते हुए शहरी कोलाहल से दूर सुरम्य घाटियों में स्थित आश्रम कब पहुंच गये, पता ही नहीं चला। आश्रम के गेट पर पहुंच कर ही रोड का अन्त हो गया।

हमारी आश्रम में पहुंचते ही माननीय भारत भूषण आनन्द जी से प्रत्यक्ष भेंट हुई। हमने अपना परिचय दिया और शिविर पंजीकरण की औपचारिकता पूरी करने हेतु संबन्धित पहचानपत्र की फोटोस्टेट प्रति जमा करने हेतु अपनी तत्परता प्रदर्शित की। हमारे लिए एक सुखद आश्चर्य की स्थिति बनी, जब भारत भूषण जी ने कहा- ''आप हमारे अतिथि हैं। औचारिकता बाद में होती रहेगी। पहले आप अपने लिए निर्धारित कक्षों में जाकर सामान रखें, नहाएं और भोजनादि करें।''

हमें आश्रम के व्यवस्थापक प्रथम तल पर बने कक्षों में ले गये। हमें नियत कमरे खोलकर उनकी चाबियां सौंप दीं। कमरों के पीछे पोर्च भी था, जिसमें स्नानघर, शौचालय, कपड़े सुखाने के लिए रस्सी, हाथ साफ करने का लिक्विड सोप, गर्म पानी आदि की उपयुक्त व्यवस्था थी। निकटस्थ झरने के गिरने की आवाज और पहाड़ियों के मनोरम दृश्य हृदय को आनन्दातिरेक से आप्लावित कर रहे थे। स्नानादि एवं आराम के पश्चात् लगभग मध्याह्न एक बजे भोजन हेतु बुलावा आया। भोजनालय में भोजन हेतु पट्टियां बिछी हुई थीं। नीचे बैठने में कठिनाई अनुभव करने वालों के लिए कुर्सी-मेज भी थीं। थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास पर्याप्त संख्या में उपलब्ध थे। सभी भोजन हेतु बैठे। आश्रम के बच्चों ने बड़े स्नेह से सभी को भोजन कराया। निर्धारित समय पर हाल में पहुंचने पर कुछ सुन्दर भजन हुए। सभी साधकों का परस्पर परिचय हुआ तथा योग साधना शिविर में मार्गदर्शन हेतु स्वामी चैतन्य देव जी, माता यति जी, ब्रह्मचारी आत्मन जी, योग शिक्षक डॉ0 प्रदीप जी तथा आचार्य संदीप जी का परिचय भी हुआ। स्वामी चैतन्य देव जी का संक्षिप्त प्रवचन हुआ, जिन्होंने देश के 7 प्रान्तों से आये साधक, साधिकाओं का हृदय से स्वागत किया तथा 17 सितम्बर प्रात: 4 बजे से विधिवत् समस्त नियत कार्यक्रमों में सम्मिलित रहने का आग्रह किया। आश्रम ट्रस्ट के चेयरमैन श्री भारतभूषण आनन्द जी ने शिविर की दिनचर्या संबन्धी जानकारी करायी और एक-एक प्रति शिविरार्थियों को उपलब्ध करा दी गयी। यह भी अनुरोध किया कि शिविर अवधि (17 सितम्बर प्रात: से 23 सितम्बर मध्याह्न तक) में भ्रमण को कोई कार्यक्रम न बनाएं और ज्यादा से ज्यादा मौन रहने का प्रयत्न करें। भारत भूषण जी ने शिविर की व्यवस्थाओं में स्वत: सहयोग के इच्छुक भाई-बहिनों से अपने नाम लिखाने का आह्वान भी किया। श्री पूरनसिंह आर्य ने कार्यक्रम संचालन तथा राजकोट से आये एक भाई ने माइक व्यवस्था की जिम्मेदारी ली। श्री कुलदीप जी व कपूर सिंह जी ने प्रात: जागरण का दायित्व लिया। शिविर के सात दिनों में गायत्री मंत्र के अखण्ड जप के लिए एक-एक घंटे का समय साधकों से मांगा। लगभग सभी शिविरार्थियों ने सहर्ष अपना नाम जप के लिए लिखवाया। परिणाम स्वरूप एक घण्टे के जप में एक साधक के स्थान पर 2 या 3 साधक साथ-साथ बैठने के लिए समयक्रम में आबंटित हुए।

परिचयात्मक सत्र के उपरांत संधिकालीन चाय और अनौपचारिक वार्ता तथा आश्रम के बगीचों में भ्रमण का अवसर मिला। सायं 6-30 बजे संध्या, आश्रम के बच्चों के भजन और जोश से परिपूर्ण भारतीय संस्कारों से ओतप्रोत उद्घोष हुए। तत्पश्चात् रात्रि भोजन की घंटी बजने पर सभी ने भोजनशाला में सुपाच्य हल्का भोजन किया। भजनोपरांत लगभग 30 मिनट मौन भ्रमण हेतु सभी आश्रम परिसर में घूमे। रात्रि 8-30 बजे आश्रम की गोशाला की गायों का सुस्वाद दूध आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराया गया। रात्रि 9-30 बजे शयन संकेत होने पर सभी साधक साधिकाएं अपने आवासीय कक्षों में विश्राम हेतु गये।

योग साधना शिविर की दिनचर्या के अनुसार प्रात: 4 बजे जागरण के लिए घंटी बजी और जागरण गीत तथा ओम ध्वनि का उच्चारण करते हुए संबन्धित महानुभावों ने भूतल और प्रथम तल के कक्षों के सामने बरामदे में दो चक्कर लगाये। अधिकांश साधक-साधिकाएं 4 बजे से पूर्व ही उठकर अपनी प्रात:कालीन क्रियाओं में व्यस्त हो गये। अगली सुबह व्यायाम, आसन, प्रणायाम आदि के लिए नियत समय प्रात: 5 बजे से पूर्व ही हाल में पहुंच गये। नियत समय पर योगाचार्य जी ने प्रारम्भ में उष्ण व्यायाम, खड़ी स्थिति के आसन, बैठ कर किये जाने वाले आसन, प्राणायाम आदि पूर्ण विवेचना और संबन्धित आसन से लाभ बताते हुए अभ्यास कराया। अन्त में हास्य और ओमध्वनि के साथ कार्यक्रम की समाप्ति की। प्रात:कालीन उपासना 6 से 6-45 तक चली। 7-30 से 9 बजे तक यज्ञ, भजन, और वेदमंत्रों का पाठ तथा प्रवचन कार्यक्रम चला। 9 से 10 तक प्रात:कालीन अल्पाहार हुआ। 10-30 से 12 बजे तक योगदर्शन पर ब्रह्मचारी आत्मन जी और महात्मा चैतन्य स्वामी जी के प्रवचन हुए। सरल भाषा में व्यावहारिक उदाहरण देते हुए गूढ़ विषय को रोचक ढंग से समझाया। मध्याह्न 12 से 1 बजे तक सभी को पूर्ण मौन रहने तथा आवश्यक होने पर संकेतों के माध्यम से परस्पर संप्रेषण को आग्रह किया गया, जिसका सभी ने अक्षरश: पालन किया। 1 बजे से भोजन तथा भोजनोपरांत तक विश्राम का समय निर्धारित किया गया। 3-30 बजे हॉल में शंका समाधान चक्र चला, जिसमें साधक-साधिकाओं को उनके प्रश्नो का समुचित उत्तर ब्रह्मचारी आत्मन जी ने दिया। लगभग 1 घंटे के शंका समाधान के तुरंत पश्चात् 4-30 से सायं 5 बजे तक महात्मा जी ने अति रोचक ढंग से व्यावहारिक वार्ता की। इसके उपरांत माता यति जी के संगीतमय भजन और उपासना के मंदिम स्वर जप करते हुए कानों में गुंजायमान होते रहे।

शिविर के चतुर्थ दिवस (20 सितम्बर) को सायं एकत्रीकरण के स्व अनुभव कथन का अवसर दिया गया। मेरे साथी श्री वीरेन्द्र स्वरूप सक्सैना (सेवानिवृत्त प्राचार्य) और श्री अनिल कुमार तायल ने अपने विचार और सुझाव प्रस्तुत किये। श्री अनिल जी ने सुझाव दिया कि आश्रम में प्राकृतिक पद्धति से लोगों को नैसर्गिक जीवन जीने की व्यवस्था हो, तो निरंतर इस स्थान पर व्यक्तियों का आना-जाना रहेगा। इस सुझाव पर आश्रम के अध्यक्ष भारत भूषण आनन्द जी ने सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए इस व्यवस्था हेतु प्राकृतिक चिकित्सक की व्यवस्था करने में सहयोग करने का आग्रह किया और संबन्धित सभी संसाधनों के लिए अर्थ की व्यवस्था का आश्वासन दिया। श्री सक्सैना जी के सुझाव पर प्रतिक्रिया स्वरूप यह जानकारी दी गयी कि वर्तमान में वर्ष में 2 बार (सितम्बर माह तथा अप्रैल माह) योग साधना शिविर संचालित होता है। इसके अतिरिक्त अपनी सुविधानुसार कभी भी यहां आया जा सकता है। इच्छानुसार रुकने व भोजन आदि की समुचित व्यवस्था रहेगी। शिविर समाप्ति पर मेरे द्वारा दिये गये लिखित परामर्श को श्री भारत भूषण जी ने बहुत सराहा और यह आग्रह किया कि प्रकृति की गोद में बसे इस सुरम्य वानप्रस्थ आश्रम की जानकारी अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुंचाने में सहयोग करें और आगामी वर्ष 2019 के अप्रैल माह में होने वाले शिविर में अपने साथ परिवारीजनों एवं इष्ट मित्रों को भी लेकर आयें। शिविर की अमिट यादें लेकर हम शिवखोड़ी तथा जम्मू का भ्रमण करते हुए 26 सितम्बर की प्रात: दिल्ली पहुंचे, तथा दिल्ली से कार द्वारा ग्रेटर नोएडा अनिल जी को छोड़ते हुए सिकन्द्राबाद आवास पर पहुंच गये।

मैं विगत वर्षों से रा0स्व0 संघ का सक्रिय कार्यकर्ता हूं। अत: अनेकानेक शिविर (एक दिवसीय से लेकर एक माह तक के) करने का अवसर मिला है। परन्तु आर्यावर्त केसरी के माध्यम के गढ़ी (उधमपुर) के आश्रम में आयोजित शिविर में बिताये गये 8 दिन (16 से 23 सितम्बर 2018) मेरे जीवन का अविस्मरणीय अनुभव रहेगा। मैं अपने इस अनुभव से सभी आर्यजनों का आह्वान करता हूं कि एक आर इस आश्रम में अवश्य जाने का कार्यक्रम निश्चित करें।

पुनश्च: योग साधना शिविर में जम्मू से आये श्री चौधरी जी (इंजीनियर) के समर्पण और सहयोग भाव के लिए हम विशेष आभारी हैं। उनके द्वारा हमें गांधीनगर आर्य समाज भवन, जम्मू में रुकने की व्यवस्था करायी गयी। गढ़ी आश्रम के निकट दुकानदार विजय कुमार जी ने हमें स्थानीय सिम उपलब्ध कराया, जिससे परिवार से संपर्क करने में हमें सुविधा प्राप्त हुई। इन बन्धुओं के प्रति हम हृदय से कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ और आर्य पर्वों पर केन्द्रित
एक श्रेष्ठ पुस्तक
आर्य पर्व पद्धति
(केवल 20/- में उपलब्ध)
आर्यावर्त प्रकाशन,
अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
सम्पर्क- 9412139333
आज ही मंगाएं
अर्चना यज्ञ पद्धति
(केवल 12/- में उपलब्ध)
साथ ही अनेक अन्य महत्वपूर्ण संग्रहणीय पुस्तकें सूची मंगाएं

गंगा जल की महिमा

श्रीमती कृष्णा देवी शर्मा

'गंगा' शब्द गमनार्थक गम् धातु में औणादिक गन् व टाप् अत्यय लगाने से बनता है। 'गंग पृथ्वी गता गंगा' जो पृथ्वी पर आती है वह 'गंगा' है।

गंगा हिमालय के जिस स्थान से पहली बार प्रकट होकर आगे बढती है उस स्थान को 'गोमुख' कहते हैं। जिस स्थान पर यह सागर से मिलती है, उसको गंगासागर कहा जाता है। गंगा की लम्बाई गोमुख से गंगासागर तक लगभग 2500 कि0मी0 है। दो नदियों का संगम जहाँ–जहाँ होता है उन सबकी वहाँ अलग–अलग प्रयाग संज्ञा है। भारत सरकार ने गंगा को 2008 में राष्ट्रीय नदी घोशित कर दिया है।

अदिभ्र्गागाणी शुद्धध्यन्ति मनः
सत्येन शुद्धयति। अनु0
विद्यातयोम्यां भूतात्मा बुद्धि
ज्ञीनेन शुद्धयति।। (5/109)

(अदिभ्र्गागाणी शुद्धध्यन्ति) जल से शरीर के वाहय् के अवयव (सत्येन मनः) सत्याचरण से मन (विद्यातपोम्यां भूतात्मा) विद्या और तप अर्थात सब प्रकार के कश्ट भी सह के धर्म ही के अनुश्ठाान से जीवात्मा (ज्ञानेनबुद्धिः शुद्धयति) ज्ञान अर्थात पृथ्वी से होकर पर्यन्त पदार्थो के विवेक से बुद्धि दृढ़ निश्चय पवित्र होती है।

महर्षि दयानन्द कहते हैं 'तीर्थ' जिससे दुःख सागर से पार उतरे कि जो सत्यभाषण, विद्या, सत्संग, योगाभ्यास, पुरूषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्म है उसी की तीर्थ समझता हूँ इत जलस्थलादि को नहीं। (सत्यार्थ प्रकाश, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश) यदि नित्य स्नान न किया जाये तो शरीर में मैल की एक तह जम जायेगी, जिससे रोगकूप के छिद्र बन्द हो जायेगें। भीतर का जल तथा दूषित वायु बाहर न निकल पायेगी, जिससे शरीर में दुर्गन्ध और अनेक रोगों की उत्पत्ति हो जायेगी। सर्वप्रथम सिर से जल डालना चाहिए, इससे सिर आदि की गर्मी पैरों से निकल जाती है। पैरों से प्रथम जल डालने से पैर आदि अंगों की गर्मी सिर में पहुँचकर हानि पहुँचाती है। सिर पर उश्ण जल डालने से बुद्धि दौर्बल्य, दृष्टि में न्यूवता तथा बाल जल्दी सफेद होनें की सम्भावना रहती है। स्नान से शरीर की दुर्गान्ध, पसीना, भारीपन, आलस्य, दाह तथा मैल की निवृत्ति होती है तथा शरीर के रोमकूपों का मल दूर होकर वे खुल जाते हैं। बहता हुआ जल शुद्ध और गुणकारी होता है यह मनुष्य को शक्ति व गति देता है। यह बलवर्धक है और शरीर को सुन्दरता प्रदान करता है। जल ही सभी प्राणियों के जीवन का आधार है। जल का मुख्य गुण है पदार्थों को गीला करना और उसके दोशों को निकालना। विद्युत जल का प्रकाश है। पृथ्वी जल का आश्रय स्थान है। आज जल का सूक्ष्म रूप है। वाणी में संरक्षता और जीभ में आर्द्रता जल के कारण है। जल के कारण ही आँखों में तेंज और दर्शन शक्ति है।

जल जीवन है, अमृत है, रोगनाशक है, आयुर्वर्धक है, जल में औशधियों के तत्व विद्यमान है जल से प्यास बुझाते हैं, जलपान करने से मन शान्त होता है। जल से औशधियां, पौधें, वृक्ष आदि उगते हैं तथा खेतों की सिंचाई करते हैं, इससे अग्नि को शान्त करते हैं। जल के अणु आपस में शीघ्रता से मिल जाते हैं। जल झरनों, नदियों, तालाबों, झीलों, समुद्रों में होता है, पृथ्वी के अन्दर भी जल है।

सूर्य के ताप से पृथ्वी के जल की भाप बनकर बादल बनते है, जो वर्षा करते हैं सूर्य की किरणों कृमिनाशक है। इसकी गर्मी से फसल व फल पकते हैं। यह जीवों की आंखों को शक्ति देता है। सूर्य गली सड़ी वस्तुओं का नाशक है। गंगा जल सब प्रकार के जलों में सर्वोत्कृष्ट और सर्वदोशनाशक है। यह शीतल हल्का तृप्तिदायक, आनन्दबर्धक, पाचक, बुद्धिवर्धक, जीवन शक्ति का विकास करने वाला और समस्त रसायन गुणों से भरपूर है। गंगा जल किसी पात्र में चिरकाल तक रखने पर भी यह विकृत नहीं होता है। इस जल में रोगाणुओं को नश्ट करने की विशिष्ट क्षमता है। यह वासी नहीं होता है। वस्त्रादि के द्वारा जल को छानकर एवं पवित्र करके ही जल को पीयें।

सूर्य राशियों के सम्पर्क में आने से जल पवित्र होता है क्योकि सूर्य की किरणों से कृमिनाश करने की शक्ति प्राप्त होती है। गंगा जल में अन्य जलों की तुलना में ऑक्सीजन की मात्रा अधिक होती है तथा यह अधिक समय तक रहती है। बहुत अधिक ठंड में कीटाणु मर जाते हैं इसलिए गंगा जल पवित्र रहता है। पहाड़ों की चट्टानों में ऐसे खनिज पदार्थ हैं जो कीटनाशक हैं जैसे गंधक, चूना आदि गंधक के गर्म पानी के झरने जो पानी के कीटाणुओं को मारने तथा त्वचा के रोगों और पेट के रोगों को दूर करने में सहायक होते हैं।

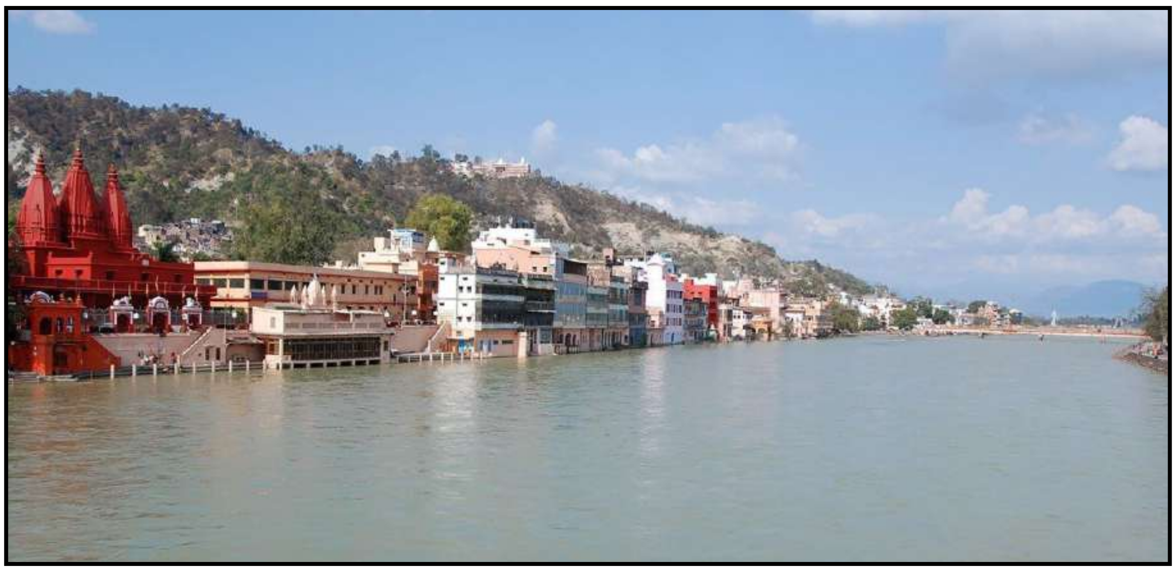

गंगा जल विभिन्न दिशाओं में बहता है कभी वह दायें हाथ बहता है, कभी बायें हाथ कभी नीचे जाता है, कभी उपर जाता है और कभी चक्राकार। इससे स्वाभाविक चक्कर, जल भंवर एवं कम्पन पैदा होते हैं। पानी के इस प्रकार के प्रवाह से पानी में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है और वह वैसा ही हो जाता है जैसा कि वह अपने पहाड़ी गन्तव्य स्थान के समय था। पानी में जो सूक्ष्म कीटाणु एवं जीवाणु होते हैं वे खुली ऑक्सीजन के कारण गंगा जल में पड़े दूषित कूड़े करकट को तोड़ते तथा नशट करते रहते हैं। गंगा के जल में ''वैक्टीरियोफेज, नामक जीवाणु होते हैं, जो विशाणुओं एवं अन्य हानिकारक सूक्ष्म जीवों को जीवित नहीं रहने देते हैं। सूर्य की लाल रंग की किरण में गर्मी होती है, जो गंगा जल को गर्म करती है, गर्मी कीटाणु को मारती है। पीले रंग की किरण पानी को पारदर्शी बनाती है। पानी स्वच्छ और निर्मल हो जाता है और इस जल में औशणीय गुण आ जाते हैं। गंगा जल में जो सूक्ष्म कीटाणु एवं जीवाणु होते हैं वे खुली ऑक्सीजन के कारण पानी में पड़े कूड़े करकट को नष्ट करते हैं, यदि कोई शव वह रहा होता है तो ये सूक्ष्म कीटाणु एवं जीवाणु उस शव को खाकर नष्ट कर देते हैं। इस प्रकार यह जल पवित्र होता रहता है। गंगा में कछुए, मछलियां आदि रहते हैं ये जल के कीड़े मकौड़ों को नष्ट करते हैं। कछुए शव को खाकर जल को शुद्ध करते हैं। नदी में बाहर आने वाली पत्तियों आदि को खाकर मछली पानी को शुद्ध करती है। हिमालय की धातुओं, दिव्य औषधियों के कारण गंगाजल विषनाशक पुष्टिकम तथा आरोग्यदायक है।

गंगा जल के पात्रों में रेत और मिटटी नीचे बैठ जाती है। इस रेत एवं मिटटी में खनिज तांबा, खनिज क्रोमियम आदि होते हैं। खनिज तांबा, गंगा जल में उत्पन्न कीटाणुओं और फफूदी को नष्ट करने की शक्ति रखता है। तांबे में कीटाणु फफूदी नाशक शक्ति है। क्रोमियम विषाक्तता को दूर करता है। गंगा की मिटटी में सूक्ष्म रेडियोधर्मिता तथा अधिक मात्रा में तांबा एवं क्रोमियक होता है। इन्हीं तत्वों से गंगा के पानी की विशेषता है।

मनोवाक्कापशुद्धानां राजस्तीर्थ
पदे पदे।/तथा
महिलनचिन्तानां गंगादि
कीकटाधिका।।
(भविष्य पुराण, देवी भागवत
4/8/28)

जिसने हिंसा, चोरी तथा व्यभिचार का त्याग करके शरीर को शुद्ध कर लिया। निन्दा, चुगली, कठोर वचन तथा निरर्थक वार्तालाप का त्याग कर वाणी को शुद्ध कर लिया तथा पर धन हरण, दूसरों का अनिष्ट एवं अपनी श्रेष्ठता के अंहकार को त्याग कर मन को शुद्ध कर लिया उसके पद पद में तीर्थ है। मलिन अन्तःकरणवालों के लिए तो गंगा भी कीकटादि से भी अधिक है। श्रद्धालु जन के लिए उचित है कि गंगादि तीर्थ पर पापाचरण को प्रयत्नपूर्वक त्यागकर मनोवाक् कर्म से धर्म संग्रह करें। हमें गंगा की वास्तविक महिमा को स्वीकार करना चाहिए तथा कल्याण का भागी होना चाहिए।

–ग्राम एवं पत्रालय घटायन
जनपद मुजफ्फरनगर, उ0प्र0

संघ लोकसेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित
सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019 -2020

भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्य समाज के शिक्षण संस्थानों/ गुरुकुलों2 सेवाकेन्द्रों/ बालवाड़ियों, डी0ए0वी0 संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं, जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, आर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं, उन सबके लिए आर्य समाज की ओर से स्वर्णिम अवसर है।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/ मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमंत्रित करके भोजन, आवास, एवं तत्संबन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/ परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई0डी0 dss.pratibha@gmail.com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो0 : 9540002856 पर संपर्क करें। परीक्षा की तिथि शीघ्र ही घोषित की जाएगी। -व्यवस्थापक

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा
मोबा. : 9412139333

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड दिल्ली में स्थापित

महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सैन्टर

सोशल मीडिया में देगा एक नयी दस्तक

विनय आर्य

वर्तमान दौर में हमारी युवा पीढ़ी तेजी से इन्टरनेट व सोशल मीडिया की ओर दौड़ रही है। आज यू–ट्यूब, नैट, फेसबुक, वास्टएप आदि से युवा पीढ़ी चिपकी हुई है। खेद का विशय है कि इन पर अच्छी बातों के साथ ही अश्लीलता भी हावी हो रही है।

सोचिये युवाओं को विचारधाराओं में किस तरह लपेटा जा रहा है। उन्हें विचारधाराओं के नाम पर जहर पिलाया जा रहा है। जो समाज के स्वास्थ्य पर प्रभाव डालकर उसे बर्बाद कर रहा है, पाश्चात्य संस्कृति की तरह खाओ–पियो, मौज उड़ाओ, कौन देखता है जैसे विचारों से भरमाया जा रहा है। हमारी संस्कृति और संस्कारों पर सामाजिक आतंक की छाया है। युवाओं को सिखाया जा रहा है लिव इन रिलेशनशिप में रहो, क्या जरूरत है शादी की। आईपीसी की धारा–377 हटा दी गयी, समलैंगिकता को अपराध से बाहर कर दिया गया। अप्राकृतिक रूप से यौन सम्बन्ध को बढ़ावा दिया जा रहा है।

माध्यम पोर्न वीडियो परोसेन का हो या अश्लीलता से भरे नाटक परोसने का। आधुनिकता के नाम पर रिश्तों नातों की मर्यादा को तोड़ना सिखाया जा रहा है। सोशल मीडिया हो या यूटयूब ऐंसे न जाने आज कितने प्लेटफार्म है जिनके माध्यम से हमारे धर्म और संस्कृति पर निरंतर हमले जारी हैं। एक किस्म से कहें तो हम यज्ञ करते रहे गये और विधर्मी हमारी संस्कृति को शमशान तक ले गये।

यही सब सोच–समझकर पिछले कुछ समय पहले महाशय धर्मपाल जी के सामने यह विचार रखा गया कि इससे पहले आर्य समाज पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं में सीमित रह जाये। हमें अपने युवाओं और दुनिया तक अगर पहुँचना है, उसे विधर्मी विचारों से बचना है तो वैचारिक की चाल का जवाब अपने विचारों से देना पड़ेगा। हमें आर्य समाज का मीडिया सेन्टर खड़ा करना पड़ेगा।

महाशय जी ने अपना आशीर्वाद दिया और कार्य शुरू हो गया जो आज लगभग पूर्ण रूप से तैयार है। हालांकि इस कार्य में हमें विलम्ब हुआ किन्तु अपनी रफ्तार बढ़ाकर अभी भी वैदिक संस्कृति की पावन माला को टूटने से बचाया जा सकता है। क्योंकि वेद के जिस आदेश का अनुपालन करने में प्राचीन वैदिक ऋषियों ने अपने सम्पूर्ण जीवनों को खपा दिया था और फिर भी उनकी यह लालसा सदा बनी रहती थी कि पुन मानव की योनि में जन्म लेकर वेद के इस आदेश का पालन किया जाए हमें उसे बचाने के कार्य करना हैं। हमें वेद बचाने हैं, वैदिक संस्कृति बचानी है। आर्यत्व बचाना हैं। स्वामी जी के सपने को साकार करना है। आज महाशय जी ने जो आर्य मीडिया के रूप में हमें एक हथियार प्रदान किया है उससे वैदिक सांस्कृतिक को बढ़ाना है ताकि युवाओं तक हम उस वेद ज्ञान को ले जा सकें। जिसकी उन्हें इस बदलते दौर में सबसे बड़ी जरूरत है।

महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

वैदिक कर्मकाण्ड, आयुर्वेद व्याख्यान, प्रवचन के लिए सम्पर्क करें

सुमन कुमार वैदिक
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
मोबा. : 8368508395

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त- साहित्य बिक्री केन्द्र

पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि पूज्यपाद ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।
सम्पर्क :- डॉ. अशोक कुमार आर्य
(9412139333)

आर्यावर्त प्रकाशन/आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर 31 मई से 9 जून 2019 तक महर्षि दयानन्द की निर्वाण स्थली अजमेर में लगाया जाएगा।

शिविर में कन्याओं में शारीरिक, आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धांतों व संस्कारों का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में अहम भूमिका निभाने हेतु सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल यह शिविर आयोजित कर रहा है। शिक्षिका, सहशिक्षिका, नायिका की भी इस बार अलग कक्षाएं लगायी जाएंगी और अन्त में इनकी परीक्षा भी होगी। जो उत्तीर्ण होंगे, उन्हें इसके प्रमाणपत्र दिये जाएंगे। अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर इसका लाभ उठायें।

(साध्वी डॉ0 उत्तमायति)
प्रधान संचालिका
96722–86863

(मृदुला चौहान)
संचालिका
98107–02760

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल, आर्य समाज, बी ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली

ज्योतिष पाठ–2

ग्रीष्म और ग्रीष्म के बाद वर्षा ऋतु

आचार्य दार्शनेय लोकेश

अब आइये, अगली ऋतु के बारे में बात करें। प्रत्येक ऋतु २–२ मास की होती है (द्विराशिनाथा ऋतवस्ततोपि शिशिरादयः। .... सू०सि ० १४/१०) इस प्रकार जेष्ठ और आषाढ़ और क्रांतिवृत्तीय भाषा में कहें तो वृषभार्क और मिथुनार्क महीने वर्ष की दूसरी अर्थात् ग्रीष्म ऋतु के होते हैं। जिस दिन सूर्य वृषभ राशि में प्रविष्टि होता है ठीक उसी दिन से ग्रीष्म ऋतु आरम्भ होती है और जब तक सूर्य ६०° अंश के भोगांश तक नहीं पंहुच पता तब तक ग्रीष्म ऋतु बनी रहती है। इस प्रकार वसन्त ऋतु के बाद ग्रीष्म और पुनः ग्रीष्म के बाद वर्षा ऋतु का क्रम होता है। अब अगली खास बात जानने की ये है कि दक्षिणायन जो कि २१ या २२ जून को होता है,का प्रारम्भ विन्दु ग्रीष्म और वर्षा नामक इन दो ऋतुओं का नियमन करता है। उनका निर्धारण तय करता है अर्थात् जिस दिन सूर्य का भोगांश ६०+ अंश का होता है, उस दिन ग्रीष्म ऋतु पूर्ण होती है और वर्षा ऋतु शुरू होती है। ६०° + अंश का अर्थ है कि क्रांति वृत्त पर ६०वें अंश को पार करते ही जिसको हम मिथुन राशि को पार करते ही भी कह सकते हैं। इस दिन को श्रावण संक्रांति या वर्षा ऋतु की संक्रांति से भी जाना जाता है अर्थात् इस दिन श्रावण का महीना, वर्षा ऋतु और दक्षिणायन शुरू होते है। यह दिन तीन संक्रांतियों का दिन होता है अर्थात् श्रावण या कर्क (क्रान्ति वृत्त का चतुर्थ राशि खंड) नामक मास संक्रान्ति,ऋतु संक्रांति अर्थात् ग्रीष्म ऋतु की संक्रांति और अयन संक्रान्ति अर्थात् दक्षिणायन संक्रांति। ये दिन होता है जब सूर्य परम उत्तर क्रान्ति पर होता है तथा रात सबसे छोटी और दिन सबसे बड़ा होता है। यदि आप कर्क रेखा क्षेत्र पर हों तो उस दिन आपकी छाया दीर्घतमा होगी।

दक्षिणायन की या उत्तरायण की कुल अवधि ६ –६ मास की होती है। सू०सि ० १४/६ में कहा गया है, "भानोर्मकरसंक्रान्तेः षण्मासाः उत्तरायणम्। कर्कादेस्तु तथैव स्यात् षण्मासाः दक्षिणायनम्। (अर्थ – सूर्य की जिस दिन मकर संक्रांति होती है और उस ही दिन से छः महीने उत्तरायण के होते हैं। ऐसे ही छः महीने कर्क संक्रांति से दक्षिणायन के होते हैं।) इस प्रकार ३ ऋतुवें उत्तरायण की ओर ३ ही ऋतुवें दक्षिणायन की होती हैं। क्रांतिवृत्तीय भाषा में कहें तो एक परमक्रांति से अगली प्ररमक्रांति तक का षड्मासीय अवधी एक अयन कहलाती है। दक्षिणायन के अन्तर्गत वर्षा ऋतु का समय सूर्य, क्रांति वृत्त में ३०° + अंश के भोगांश से १५०° अंश के भोगांश के बीच (श्रावण और भाद्रपद के द्विमास का समय) होता है। गणितीय तौर पर संवत्सर, अयन ऋतु ,मासादि से लेकर कला विकलादि पर्यन्त के सम्पूर्ण विश्लेषण को समझने में क्रान्ति की भाषा का उपयोग है। वेद में कामना की गयी है, " ग्रीष्मो हेमंत शिशिरो वसन्तः शरद् वर्षाः स्वीते नो दधात। " (अ० वे० ६/५५/२) खास बात ये है कि सम्पात (वसंत ०° या शरद १८०° सम्पात में से कोई भी) एक ही ऋतु का मध्य विन्दु होता है जबकि अयन (दो ऋतुओं का मध्य विन्दु होता है। दक्षिणायन ६०° या उत्तरायण २७०° में से कोई भी)। हमें ऋतुओं को यथावत् लेना ही वेद का मार्गदर्शन है (ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथि वी नो दुहाताम्) और इसी मार्गदर्शन के न लेने से आज के प्रचलित पञ्चाङ्ग भ्रामक कहे जा सकते हैं। ऋग्वेद १/१५५/६ – "चतुर्भिः साकं नवतिं च नामभिश्चक्रं न वृत्तं व्यतीँर वीविपत्।........" में इस बात की प्राकृतिक व्यवस्था का मार्गदर्शन है कि चक्र के सामान विद्यमान वृत (क्रांतिवृत) नवति नवती के(६० –६० के) चार भागों से युक्त होता है। और अन्त में आज का एक प्रमुख संदेश–

ध्रुव तारे और सप्तऋषि तारा मंडल की पहिचान

ध्रुव की पहिचान–

आकाश मे नक्षत्रों को पहिचान लेना रोचक एवं आवश्यक है। ध्रुव की पहिचान हो जाने पर नक्षत्रों का उदय अस्त,क्रान्ति वृत्त और विषुवद् वृत्त आदि समझ मे आ जायेंगे। जिस प्रकार पृथ्वी का उत्तर और दक्षिण ध्रुव है और जिस प्रकार पृथ्वी का झुकाव ध्रुव की ओर जमीन के धरातल से 23° 17' पर है उसी प्रकार आकाशीय उत्तर ध्रुव भी नीचे के धरातल से ऊपर उठा हुआ दिखता है। ध्रुव तारा के आस पास सप्त ऋषि तारामण्ल के 7 तारे हैं। वे ध्रुव की परिक्रमा करते रहते हैं जिससे ध्रुव तारे की पहिचान सरलता से हो सकती है। इस के लिये सप्त ऋषि तारामण्ल को पहिचानना आवश्यक है। सप्त ऋषि के पास ही लघुऋक्ष के तारें भी हैं। कभी कभी सप्त ऋषि तारागण नीचे रहने के कारण दिखते नही है। उस समय इनके विरूद्ध दिशा में और सीध मे एक तारामण्ल है जो अंग्रेजी के अक्षर 'एम' के आकार के हैं। इन्हें महर्षि या कश्यप तारामण्ल कहते हैं। इनसे भी ध्रुव तारे की पहिचान हो सकती है। सप्त ऋषि – यह 7 तारों का झुण्ड है। यह चौकोर मुह वाले चम्मच जैसा दिखता है। इसमें 4 तारे खाट के चार पायों की तरह हैं जिनसे कुछ लम्बाई लिए एक चौकोना बनता है। इन चारों के नाम क्रमशः अत्रि, क्रतु, पुलह एवं पुलत्स्य हैं। इनके नीचे 3 और तारे हैं जो इस चौकोने के छोर से कुछ तिरछी पूंछ जैसे हैं। इनके नाम हैं अंगिरा, वशिष्ठ व मारीचि हैं। वशिष्ठ के एकदम पास एक हल्की सी चमक वाला तार है जिसे अरूंधती कहते हैं। अत्रि एवं क्रतु की सीध मे यदि एक लकीर मे देखेंगें तो साधारण प्रकाश का एक तारा दिखेगा। यदि लगातार देखते रहेंगे तो पायेंगे कि यह.तारा.कभी भी चलता नहीं है। यही ध्रुव तारा है। अभ्यास से सहज ही हो जायेगा।

ज्योतिष पाठ–3 अगले अंक में।

महात्मा हंसराज की जयन्ती (19 अप्रैल) पर विशेष

डी.ए.बी. कॉलेज और महात्मा हंसराज

पं0 इन्द्र विद्यावाचस्पति

जिस व्यक्ति के स्वार्थ–त्याग के डी.ए.बी. कॉलेज के संचालकों के उत्साह को कई गुना कर दिया, उसका जन्म होशियारपुर जिले के बजवाड़ा कस्बे में हुआ था। आपके पिता का नाम चुन्नीलाल था। जिस समय इनके पिता का देहान्त हुआ, हंसराज जी के बड़े भाई लाला मलकराज भल्ला ने लाहौर में आकर रेलवे में नौकरी कर ली और वहीं हंसराज की शिक्षा प्रारम्भ हुई। आप अच्छे विद्यार्थियों में समझे जाने लगे। बालकावस्था में ही आपके हृदय में धर्मप्रीति उत्पन्न होने लगी थी। आपके स्कूल के हैडमास्टर ईसाई थे। एक दिन वे भारतवर्ष का प्रामाणिक इतिहास पढ़ाते–पढ़ाते कहने लगे कि प्राचीन आर्यलोग पत्थरों और वृक्षों की पूजा किया करते थे। आपने उनके इस निर्मूल विचार स्थापना का विरोध किया। विवाद यहाँ तक बढ़ा कि आपको दो दिन के लिए स्कूल छोड़ना पड़ा।

1880 ई. में हंसराज ने ऐन्ट्रेन्स की परीक्षा और 1885 में बी.ए. परीक्षा पास की। परीक्षा के उत्तीर्ण विद्यार्थियों में आपका नम्बर दूसरा रहा। विद्यार्थी काल में ही आप आर्यसमाज के सत्संग में आने लगे थे उन दिनों आर्यसमाज लाहौर में एक दृढ़ आत्मा का निवास था। वह एक सुगन्धित फूल था जिससे संसर्ग होते ही सुगन्ध पैदा हो जाती थी। आर्यसमाज के प्रधान लाला साईंदास जी थे। जिन्होंने नवयुवक हंसराज जी की हृदय भूमि को हल से खूब नर्म और तैयार कर दिया तो एक–दूसरे महापुरुष ने उनमें धर्म का बीज बोया। कॉलेज में प्रविष्ट हो जाने पर लाला हंसराज जी पं. गुरुदत्त जी के संसर्ग में आये। आप पं. गुरुदत्त जी के गहरे मित्रों ओर सहयोगियों में से थे।

1885ई. में आप बड़ी सफलता के साथ बी.ए. परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। उधर पंजाब की आर्यसमाजों में डी.ए.बी. कॉलेज के लिए उत्साह उमड़ रहा था। जोश था, धन था, इच्छा थी, परन्तु नई संस्था के लिए किसी योग्य हेडमास्टर के न मिलने से सम्पूर्ण आन्दोलन निराशामय–सा प्रतीत होता था। उस समय लाला हंसराज जी ने अपने आपको सेवा के लिए पेश किया। आपने बिना कुमछ वेतन लिए डी.ए.बी. स्कूल में कार्य करने को इच्छा प्रकट की। अन्धे को, ऑखें मिलीं। डी.ए.बी. कॉलेज कमेटी का उत्साह दुगना हो गया और प्रान्तभर में एक जोश की लहर चल निकली। आर्यसमाज की उस समय की परिभाषा में लाला हंसराज जी की उस कुर्बानी ने डी.ए.बी. कॉलेज को मुमकिन बना दिया।

उत्साह का स्थूल रूप दान है। किसी सार्वजनिक संस्था के लिए जनता में उत्साह है या नहीं, इसकी परख आर्थिक सहायता से होती है। इस कसौटी पर परख

कर देखें, तो प्रतीत होता है कि आर्यसमाज में उस समय डी.ए.बी. कॉलेज के लिए बड़ा उत्साह था। ऋषि की मृत्यु के कुछ समय पीछे ही लाहौर में जब सभा हुई थी तो 9000 एकत्र हुआ। इस राशि में आर्य महिलाओं के आभूषण भी शामिल थे। आज देखने में 9 सहस्र की रकम छोटी दिखाई देती है परन्तु उस समय की दशा बहुत विभन्न थी। रूपया आप से महंगा था, सार्वजिनिक कार्यो के लिए दान देने की आदत लोगों को नहीं पड़ी थी और आर्य समाज में धनी पुरूषों का अभाव था। लाहौर के मुट्‌ठी भर आर्यपुरूशों में से कोई भी उस समय लखपति कहाने के योग्य नहीं था।

पंजाब में आर्य समाजों के उत्सवों पर डी.ए.बी. कॉलेज के लिए ही अपीलें होती थीं। अपील करने का काम पं0 गुरुदत्त एम.ए. और लाला लाजपतराय के ऊपर था। पं0 गुरुदत्त की योग्यता और धारा प्रवाह भाषण–शक्ति जनता पर अद्भुत असर रखती थी। लाला लाजपतराय की ओजस्वी वाणी प्रारम्भ से ही समाज सत्कार पा रही थी। कभी–कभी ट्रिब्यून समाचार के सम्पादक मि. मजूमदार भी डी.ए.बी. कॉलेज के लिए अपील किया करते थे। साधु रमताराम पंजाब के एक उत्साही कार्यकर्ता थे। बोलने में तेज, कार्य में अनथक, स्वभाव में अक्खड़, लगन के सच्चे साधु रमताराम ने डी.ए.बी. कॉलेज के लिए कुछ वर्षों तक खूब परिश्रम किया। लाहौर में आटा फण्ड चलाने का श्रेय रमताराम को ही था। पं0 गुरुदत्त जी की महत्वपूर्ण सहायता, लाला लाजपतराय जी की तेजस्विनी वाणी, और लाला हंसराज जी की जीवनाहुति ने पंजाब की शिक्षित मण्डली को कॉलेज के पीछे पागल बना दिया।

डी.ए.बी. स्कूल की स्थापना

उनका परिश्रम फलीभूत हुआ। 1 जून 1886 के दिन आर्यसमाज मन्दिर लाहौर में एक सार्वजनिक सभा हुई। विचार तो यह था कि स्कूल की स्थापना धूमधाम से की जाये, परन्तु जून के महीने को लोगों के एकत्र होने के लिए उचित न समझा गया। बड़े उत्सव को किसी दूसरे समय के लिए मुल्तवी करके ''स्वल्पारम्भ'' पर ही संतोष किया गया। पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी एम.ए. ने एक प्रभावशाली व्याख्यान मूें डी.ए.बी. कॉलेज के उद्‌देश्यों का वर्णन किया। अगले दिन आर्यसमाज मंदिर में ही लड़कों की भर्ती आरम्भ हो गई। जून मा में भर्ती होने से विद्यार्थियों से कोई प्रवेश की फीस नहीं ली गई। प्रारम्भ में स्कूल का निम्नलिखित अध्यापक वर्ग नियत किया गया।

लाला हंसराज बी.ए., हेडमास्टर
लाला दुर्गादास, सैकेंड मास्टर
भाई सोहन सिंह, साइंस के अध्यापक
लाला देवी दयाल, गणित अध्यापक
पं. श्रीकृष्ण शास्त्री,
प्रथम संस्कृताध्यापक
पं. मनोराम विशारद,
द्वितीय संस्कृताध्यापक
पं. मुनिराम विशारद,
प्रथम हिन्दी शिक्षक
पं. मूलराज, द्वितीय हिन्दी शिक्षक
पं. हरनामदास, प्रथम उर्दू शिक्षक
लाला प्यारेलाल द्वितीय उर्द शिक्षक
लाला फग्गू राम

इस प्रकार 11 अध्यापकों की मण्डली ने ऋशि के स्मारक की नींव डाली। प्रारम्भ से ही यह स्कूल सर्वसाधारण का प्यारा बन गया। पहले ही सप्ताह में 350 बालकों का प्रवेश हुआ। दूसरे सप्ताह के अन्त में छात्रों की संख्या 500 तक पहुँच गई। जून का महीना समाप्त होते–होते स्कूल में 600 छात्र पढ़ने लगे। पहले क्षण से ही डी.ए. बी. स्कूल में विद्यार्थियों में जो लोकप्रियता प्राप्त की, वह बढ़ती गई यहाँ तक कि किसी दिन लाहौर में संख्या में सबसे बड़ा स्कूल डी.ए.वी. स्कूल और संख्या में सबसे बड़ा कॉलेज डी.ए.बी. कॉलेज हो गया। डी.ए.बी. स्कूल की स्थापना के पीछे उसकी प्रसिद्धि बढ़ती गई। संचालकों ने स्थिरता उत्पन्न करने में कोई कसर न उठा रखी। 22 अगस्त 1886 को दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज सोसाइटी की रजिस्ट्री हुई।

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

- **रामायण का वास्तविक स्वरूप**, पृष्ठ-80, मूल्य-20/-
- **अर्चना यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-48, मूल्य-15/-
- **यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-120, मूल्य-35/-
- **बन्दा वैरागी** (कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृष्ठ-64, मूल्य-16/-
- **पं. प्रकाशवीर शास्त्री** (डॉ. अशोक आर्य), मूल्य- 200/- सैकड़ा
- **तारा टूटा** (वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृ0-52, मूल्य- 14/-
- **परिधियों के स्पर्श/यात्रा-यात्रा अन्तःयात्रा** (कवि प्रो. विजय कुलश्रेष्ठ), पृष्ठ-112, मूल्य-80/-
- **प्रो. विजय कुलश्रेष्ठ- हीरक जयंती उत्सव ग्रन्थ**, मूल्य-200/-
- **सत्यार्थ प्रकाश**, (महर्षि दयानन्द), पृ.-480 (सजिल्द), मूल्य-150/-
- **आर्य कन्या की सूझबूझ**, मूल्य- 8/-
- **हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज का योगदान,** मूल्य-5/-
- **यज्ञ और पर्यावरण**, मूल्य-5/-
- **दयानन्द सप्तक**, मूल्य-5/-
- **ब्रह्मराशि**, मूल्य-5/-
- **आर्यसमाज** (राष्ट्र कवि रामधारी सिंह 'दिनकर') मूल्य-8/-
- **सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें?**मूल्य-1/-
- **गौकरुणानिधि** (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 8 रुपये
- **आर्यसमाज की मान्यताएं** (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 8 रुपये
- **आर्योद्‌देश्य रत्नमाला** (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 8 रुपये
- **महर्षि दयानन्द की विशेषताएं** (म. नारायण स्वामी), मूल्य-8/-
- **नीतिशतक** (रामकुमार धनुर्धर), मूल्य- 20 रुपये
- **पुरुष-सूक्त** (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 20 रुपये
- **दयानन्द लघुग्रन्थ संुग्रह,** पृष्ठ- 212, मूल्य- 60 रुपये
- **मानव कल्याण निधि** (पं0 महेन्द्र आर्य), मूल्य- 100 रुपये
- **कर्तव्यवाद** (लक्ष्मीनारायण जिज्ञासु), मूल्य- 14 रुपये
- **अन्त्येष्टि कर्मविधि** (महर्षि दयानन्द प्रणीत), मूल्य- 8 रुपये
- **आर्य पर्व पद्धति** (14 पर्वों के मंत्रों सहित), मूल्य- 25 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- महर्षि दयानन्द**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- स्वामी श्रद्धानन्द**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- लाला लाजपत राय**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- वीर सावरकर**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- स्वामी विरजानन्द**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- महात्मा हंसराज**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- गुरुदत्त विद्यार्थी**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- लेखराम**, मूल्य- 8 रुपये
- **आर्यसमाज की विचारधारा**, मूल्य- 5 रुपये
- **अथर्ववेद काव्यार्थ- चार भागों में**, (कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत) चारों भागों का कुल मूल्य-500/-

पुस्तकों की खरीद पर विशेष छूट तथा नाम के प्रकाशन की सुविधा उपलब्ध है। वैदिक साहित्य को जन-जन तक पहुंचाएं।

–प्रकाशक

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्‌देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनयः

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/- रुपये

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांस्पोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

श्री विनय प्रकाश आर्य
एवं
श्रीमती अंजू आर्या
४०वीं वैवाहिक वर्षगांठ
६ मई २०१९
के
शुभ अवसर पर
हार्दिक
शुभकामनाएं

आर्यसमाज के प्रधान श्री नत्थू सिंह जी
एवं श्रीमती शुभद्रा देवी को
५४वीं वैवाहिक वर्षगांठ ११ मई २०१९
की शुभ बेला पर हार्दिक बधाई

श्री विनय कुमार त्यागी
एवं
श्रीमती कमलेश त्यागी
४०वीं वैवाहिक वर्षगांठ
१२ मई २०१९
के
पावन उपलक्ष्य
में
हार्दिक
मंगलकामनाएं

प्रिय सोहम को
जन्म दिवस
०९ मई २०१९
के
शुभ अवसर पर
बहुत-बहुत
शुभकामनाएं

श्री विनय प्रकाश जी आर्य को उनके
६१वें जन्मदिवस- १० मई २०१९
के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई

श्री, समृद्धि, यश, वैभव, सुस्वास्थ्य
व दीर्घायुष्य की दें
मंगलकामनाएं

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, अथवा किसी विशेष उपलब्धि जैसे पावन अवसरों पर अपने परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों को बधाई व शुभकामनाएं देना न भूलें।

आओ
आर्यावर्त केसरी के माध्यम से ऐसे बधाई संदेश व शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं...

और प्रदान करें
आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में 501/- की सहयोग रूपी पावन आहुति।
-सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

प्रो० सुषमा गोगलानी
मो० : 9582436134

॥ ओ३म् ॥

प्रतिनिधि
अशोक कुमार गोगलानी
मो० : 8587883198

HANDICRAFT

सुषमा कला केन्द्र
आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा
पारितोषिक सामग्री के लिए
सम्पर्क करें।

-: मुख्य आकर्षण :-

पता : C-1/1904, चैरी काउंटी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
(मोबा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार,
डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य